9—KALE KARNAME—NIRALA NOVEL

प्रथम संस्करण
१९६०

प्रकाशक हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१
मुद्रक विद्यामन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि०, वाराणसी-१
चित्रकार कालिदास

१

सावन का महीना आंख पर तरी बरसा रहा है । खेत लहालोट हैं, हरे-भरे, ज्वार, अरहर, उडद, सन, मक्का और धान लहरा रहे हैं । आम, जामुन के दूर तक फैले हुए बाग़ीचे फल दे चुके हैं, इस समय विश्राम की सांस ले रहे हैं । चिड़ियो के पर भीगे हुए है। फडका कर पानी झाड लेती हैं और मधुर-मधुर चहकती हुई, इस पेड़ से उस पेड पर उड जाती हैं, नीचे टिड्डे जैसे कीडो पर नज़र रखती हुई बुलबुल, गलार, पिडकी, रुकमिन, सतभैये, कोयल, पपीहा, कबूतर और बरसात की बगले की जात वाली अनेक प्रकार की चिडियां, तालाब के किनारे के ऊँचे पीपल और इमली के पेड पर बसेरा लिए हुए। ताल पर सिंघाडे की बेल फैलती हुई । लडके अखाडे कूदते हुए । औरतें काम-काज से घर और बाहर आती जाती हुईं । गांव

चहल-पहल। हिंडोले पड़े हुए। लड़कियाँ झूलती हुई। कजली, सावन, बारहमासी गाती हुई। मर्द रात को रोज होते हुए आल्हे की कड़िया गाते कन्धे पर लट्ठ रखे तम्बाकू-ठोकते हुए आते-जाते हुए। गलियारे में पानी भरा हुआ। मेड़ के ऊपर से लोगों की निकली हुई पगडंडी, वह भी पानी बरस जाने से बिखरहर। कुएँ पर पनिहारिनों का जमघट।

जमींदार रामरतन के पक्के मकान से खेत, बाग और पेड़ आदि के दृश्य दिखते हैं। गाँव के उत्तरी सिवान पर काफी-अच्छा पक्का मकान। घर में लोगों की काफी-अच्छी संख्या। कहा है इस मकान में ब्याह करते साधारण परिवार भी घबराता है। जो आदमी रोटी करने के लिए चाक में जाती है, उसका दिन भर लग जाता है। जो पिसान पीसती है उनको रोज पाँच पसेरी से भी ज्यादा पीसना पड़ता है। जिनकी पानी भरने की बारी आती है उनको एक-एक बखत पचीसों घड़े पानी खींचना पड़ता है। जिनके हवाले गोबर उठाने और गाय-भैंस दुहने का काम रहता है उनको भी दुह कर और कण्डा पाथ कर आन-मान दुश्वार हो जाती है। दो नौकर कुट्टी काटने और चारा पानी करने से फुरसत नहीं पाते। लड़के चरवाहे बागों में डार ले [illegible] करते हैं। घर भर [illegible] रहते हैं। मगर गाँव में [illegible] है। सबसे बड़े जमींदार हैं।

[illegible] इस गाँव का रहने वाला विद्यार्थी है। [illegible] हुआ। इन जमींदार [illegible] ने उस की

रिश्तेदारी है। जमीदार साहब को उसकी फूफी ब्याही हुई है। अपने गाँव राजपुर से वह जमीदार के गाँव सरायन रोज शाम के वक्त जोर करने के लिये पहलवान रामसिह के अखाडे जाता है। वही अहीरों से तीन पसेरी का दूध ले कर लिया है, जोर करने के बाद शक्कर मिला कर सेर डेढ सेर पी लेता है और शाम की बियारी उसी रिश्तेदारी में करके सो जाता है। चार बजे उठ कर गाँव चला आता है और कुछ पढ कर स्नान-भोजन करके पास के सस्कृत पाठशाले चला जाता है। आचार्य कक्षा के दूसरे साल का विद्यार्थी है।

मनोहर के पिता बम्बई में एक सेठ के यहाँ नौकर है। साधारण अच्छी आमदनी है। घर में खेती-बारी होती है, बैल हैं, गाय-भैसें हैं, गाडी है, और स्नेहशीला महिलाएँ है। गाँव के लोग इनको भलेमानुस कहते है।

आज अखाडे जाते हुए पहलवान रामसिह के पडोसी पटियैत से चार आँखें हुई। शीलवान मनोहर को उन्होंने चग पर चढाया। कहा, जोर कराने जा रहे हो!

मनोहर ने कोई जवाब न दिया। बरसात का कीचड बचा कर ऊँची पगडडी से निकलने को हुआ कि पडोसी ने खखार कर कहा, यह हमारा मकान है, गलियारा भी हमारा है, गाँव में जो शोहरत है वह कही, हाँ, बदन जैसा गठीला है और रेख-उठान

लडके उसी गाँव के, उन से कुछ वडे, मगर मनोहर से उन्नीस, ज़ोर करने के लिए आ गये।

उस्ताद ने लँगोटा वाँधा। पहले गाँव के वडे लडको को लडाया। छोटे लडके एक दूसरे से अखाडे के किनारे-किनारे लडते रहे। अखीर में उस्ताद ने मनोहर को वुलाया। मनोहर तगडा है। लडता भी अच्छा है। वम्वई जाता है तो वडे पहलवान से जोर करता है। कई दाँव रवा है। उस्ताद सम्हले रहते हैं। मगर जोर वे मनोहर के जैसे दो-तीन को करा सकते हैं। दस्ती, उतार, लोकान, पट, ढाक, कलाजग, घिस्से आदि दाव चले और कटे। ताकत में भी रामसिंह वीस थे। मनोहर को जोर कराकर हरे होने लगे।

ठडे हो कर लोगो ने अखाडा विदा किया। मनोहर दुकान से आधा पाव शक्कर लेकर अहीर के घर गया। दुपट्टे में शक्कर रख कर दूसरे लोटे में दूध छान लिया और वही वैठे वैठे पी गया, फिर रोज़ की तरह अहीर से पानी मँगवा कर दोनो लोटे धो कर दे दिये और जमीदार की हवेली के सामने पीपल के तले वाले चबूतरे पर वैठ कर पुरवैया के झोके लेता रहा। अब तक रात एक पहर हो आई थी।

मनोहर को यहाँ कुश्ती के लिए आते अभी वहुत दिन नही हुए। माजरा यह है कि वह वम्वई में पिता के पास रह रहा था। सस्कृत वही पढ़ता था। मगर खाने-पीने का आराम

रहने पर भी बम्बई का पानी उस को उतना अच्छा नही लगा। घर वाले साल छ महीने के लिए बम्बई रह आते थे, मगर दिल घर पर ही लगा रहता था। मनोहर का गाँव ऐसी जगह है, जहाँ से कस्बे की संस्कृत पाठशाला नज़दीक है। घर में रहने का भी सुभीता है, इसलिये उसके पिता ने और घर वालों ने उसका घर रहना ही अच्छा समझा। रामसिंह से उस की मुलकात यों हुई कि निर्वाह के लिये रामसिंह कपडे की दूकान करते थे, कस्बे के बाजार गाडी पर लाद कर कपड़े ले गये थे। गाँव के जमीदार के लड़के मनराखन ने कुश्ती के शौकीन मनोहर से दूर से रामसिंह को दिखाते हुए कहा, "अपने यहाँ के यह सबने अच्छे पहलवान है, जोर करना चाहो तो इन से बातचीत कर लो, फिर हम भी अच्छी तरह दाँव-पेंच सिखाने के लिये कह देंगे। हमारे रिश्तेदार होते हैं।"

मनोहर सीधे स्वभाव का रेख-उठान युवक, रामसिंह के पास मुस्कराता हुआ गया और जोर करने की बातचीत छेडी। सुन कर रामसिंह देखते रहे और तोल कर कहा, अच्छी बात है आया करो। इसके बाद मनराखन एकान्त में मिला और अपनी जमीदारी का राज कह कर जैसे अपनी रक्षणशीलता रामसिंह को दी। रामसिंह ने मुस्करा कर राज लेते हुए कहा अच्छी बात है, मगर हमारे गाँव का हिसाब है।

मनराखन ने कहा, आप लोगो का हिसाब ठाकुरो के सिवा दूसरे जमीदार क्या लेंगे ! देख लिया जायगा। असामी मोटा है। जमींदार की निगाह न रही तो किसी रोज सर हो सकता है। यों, सर किये रहिये।

रामसिंह का राज गाँव में एक पड़ोसी जमींदार के यहाँ था, मगर गाँव भर के छोटे जमीदारो का राज मनोहर के रिश्तेदारो के यहाँ रहता था। सरकारी मालगुजारी इन्ही की सब से ज्यादा थी।

मनोहर के आने पर पहले पहल किसी ने कोई छेड-छाड़ नही की, जैसे कुछ होता हुआ भी न हो रहा हो। दो एक रोज बाद बातो ही बातो रामसिंह ने अपने राज का इज़हार किया। दूसरे जमीदार का माथा ठनका। उसने कहा, तुम हमराज हो, किसी को जो तुम्हारा रिश्तेदार नही, अगर लो तो हम से पूछकर, क्योकि ऐसा ही सरकार और जमींदार का कायदा है। जिस गाँव के यह हैं, वहाँ का जमीदार जिम्मेवार होगा। रात आठ नौ बजे के बाद जब यह आप के यहाँ से चले जाते है तब कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, किसी को नही मालूम। अगर कोई चोरी डाका हो जाय तो क्या तुम इसके जिम्मेवार होगे ?

रामसिंह ने कहा, यहाँ वह जो तुमसे भी बडे जमीदार हैं, इनके रिश्तेदार है। वही रात को रहते हैं। नवेरे गाँव

जाते हैं। हम को इतना ही मालूम है। इनके गाँव के जमीदार हमारे रिश्तेदार हैं। राज हमारा ठाकुरो का। सर चढ़ कर बातचीत की तो हजारो घोड़े मुतवावेंगे।

इस तरह बातचीत बढते-बढते बढ गयी और गाँव भर में तरह-तरह का रग चढने और उतरने लगा। मनोहर के रिश्तेदार ने गभीर हो कर सुन लिया। लोगो की सलाह उन को पसन्द आई। रार्मसिह चने हो कर भाड कैसे फोड सकते हैं, उन के जमीदार की यह शिकायत उन को सही मालूम हुई। उन्होने मतलब बैठा लिया कि किस रास्ते गुज़रा जाय, गाँव के मामले में रार्मसिह की मदद दूसरे गाँव से कैसे पहुँच सकती है।

मनोहर चबूतरे पर बैठा हवा ले रहा था। हवेली की चौपाल से चबूतरा देख पडता है। जमीदार मनोहर के फूफा साहब उठ कर चले। मनोहर के पास आ कर बैठे। पहले मन लेते रहे, बहलाते रहे। यह मालूम होने पर कि मनोहर सच्चा है और रामसिंह को उस्ताद की निगाह से देखता है, उन्होने कहा, बच्चा! देहात का हिसाब-किताब तुमको कम मालूम है। जमी का जाल बिछा है। जो जमी तुम्हारी नही उस पर पैर रखने का भी हक तुम को नही, अगर उस का जमीदार किसी सूरत से तुम्हारा रखवाला नही। सरकार को एक जवाब जमीदारी के अन्दर के किसी कारनामे के लिये देना

पड़ता है। तुम जिस गाँव से आये हो, तुम्हारे साथ उस गाँव का राज भी आता है। उस गाँव के जमीदार का राज इस गाँव का जमींदार रियाया की हैसियत से न लेगा। जो तुम्हारे पहलवान हैं वह तुम्हारे नौकर नहीं, तुम खुद उनके यहाँ लड़ने आते हो यानी उनके मातहत हो। ऐसा होने पर जमीदार के साथ का उन का रिश्ता जाता रहता है। वर्ताव में बल पड़ता है। जमीदार से वह एक रैयत की हैसियत से नहीं पेश आ सकते। रैयत के तौर पर वह तुम को पेश करते हैं। लेकिन जमीदार तुम को नहीं ले सकता, क्योंकि तुम्हारे साथ हमारा हिसाब है, और हम जमींदार की तौहीन होने से हर तरह बचाएँगे। ग़र्ज़ यह कि हमारे रिश्तेदार की हैसियत से तुम वहाँ जा सकते हो, मगर यहाँ के जमीदार के आदमी बन कर। कल अपने जमीदार से कह कर आना कि हम उन के आदमी हैं हमारा नाम ले कर, तब तुम्हारी समझ में बात आ जायगी। इस गाँव में हमारे आदमी को अपने आदमी क़रार नहीं दे सकते और जमीदार के आदमी को नहीं लड़ायेंगे तो क्या गुजरेगी यह उनके आगे आयेगा।

फिर हँसते हुए दूसरी बातचीत करने लगे। मनोहर ने सुना, उन्होंने मन ही मन कहा, ठाकुर बहक गये।

कुछ देर बाद जमींदार साहब उठ कर चले गये। मनोहर विचार में पड़ गया। उस को नया विषय मिला, नया रास्ता

जिस से वह कभी नही गुजरा। उस को गांव के जमीदार की बातें याद आई, बाद को बाजार में मिलने का दृश्य एक बार फिर आंखो पर घूम गया, हकीकत बडी भयावनी लगने लगी। हाथ-पैर ढीले हो चले। उसने कभी नही सोचा, जमीदार की जात ब्रह्म-राक्षस से बढ कर है जिससे पीछा कभी नही छूटता। क्षण भर में उसके मन की दशा बदल गई। पूरा-पूरा ज्ञान इस सम्बन्ध का पा लेने के लिए उकताने लगा। इतनी भाप भर गई कि दूसरे ही दिन बम्बई रवाना हो जाने की सोचने लगा।

कुछ देर बाद एक आदमी बुलाने के लिये आया। मनोहर खाना खाने चला। घर के ग़ैर लोगो को बाहर निकाल कर उसकी फूफी आज खुद थाली परोस कर बैठी।

मनोहर हाथ-पैर धो कर, कुल्ले कर के थाली पर बैठा। उस की फूफी ने मुस्करा कर कहा, क्यो रे, तू पागल है! तुझ को यहां लडना था तो हमसे कहता? रामसिंह आंखें क्या चढ़ाने लगा! ले-दे कर एक जोडी बैल, एक गाडी और एक दो-गांठ कपड़ा! जैसा कहा, कल वैसा कर। अभी तक हम लोग चुप थे। लडका है, खिलवाड है। कल सही हाल मालूम हो जायगा। इसके बाद, जब यहां से जायगा, गांव के डांड तक हमारा राज, उधर उन का।

मनोहर को सारी रात बेचैनी रही। पड़ा तारे गिनता रहा। बहुत दूर तक अक्ल चलती नही थी, फिर भी जमीन-आसमान

के कुलावे मिलाता रहा। जब ठंडी हवा लगती थी, सोचता था, दुनिया में लोग एक दूसरे से इस तरह क्यो नही मिलते कि छोटे-बड़े का भेद-भाव भूल जाय, एक दूसरे के गले-लगे दोस्त हो, गर्दन नापने वाले दुश्मन नही। माजरा जैसा रग पकड़ रहा है, आखिर तक किसी की जान से गुज़र कर रहेगा।

लेटे कुछ देर हुई कि एक नौकर आया। उसने कहा, गाँव में किसी चिड़िया को यह हाल न मालूम हो। जमीदार से कह आना दूसरे गाँव का हमारा राज़ हमारे रिश्तेदार के यहाँ है। यहाँ मालिक के छोटे भाई आपसे मिलेंगे। जैसा-जैसा कहें करते जाइयेगा। यह कह-कर वह चला गया।

मनोहर फिर करवटें बदलने लगा। पुरवाई के झोके कभी-कभी झाड़ियो की खुशबू से लदे मस्त करते हुए आने लगे। आल्हा की धुन सुन पड़ने लगी। साथ ढोलक बज रही थी। कुछ देर बाद मनोहर अपनी उधेड़-बुन में आ गया। जैसे भूल-भुलैयो में पड़ गया हो, निकलने का रास्ता न पा रहा हो। जी उकताने लगा। आँखो पर रात पार हो गई। पौ फटने की सूरत नज़र आई। वह उठ कर गाँव को चला।

★

जिस से वह कभी नही गुज़रा। उस को गांव के ज़मीदार की बातें याद आई, बाद को बाज़ार में मिलने का दृश्य एक बार फिर आंखो पर घूम गया, हकीकत बडी भयावनी लगने लगी। हाथ-पैर ढीले हो चले। उसने कभी नही सोचा, ज़मीदार की ज़ात ब्रह्म-राक्षस से बढ कर है जिससे पीछा कभी नही छूटता। क्षण भर में उसके मन की दशा बदल गई। पूरा-पूरा ज्ञान इस सम्बन्ध का पा लेने के लिए उकताने लगा। इतनी भाप भर गई कि दूसरे ही दिन बम्बई रवाना हो जाने की सोचने लगा।

कुछ देर बाद एक आदमी बुलाने के लिये आया। मनोहर खाना खाने चला। घर के ग़ैर लोगो को बाहर निकाल कर उसकी फूफी आज खुद थाली परोस कर बैठी।

मनोहर हाथ-पैर धो कर, कुल्ले कर के थाली पर बैठा। उस की फूफी ने मुस्करा कर कहा, क्यो रे, तू पागल है! तुझ को यहां लडना था तो हमसे कहता? रामसिह आंखें क्या चढाने लगा! ले-दे कर एक जोडी बैल, एक गाडी और एक दो-गांठ कपड़ा! जैसा कहा, कल वैसा कर। अभी तक हम लोग चुप थे। लडका है, खिलवाड है। कल सही हाल मालूम हो जायगा। इसके बाद, जब यहां से जायगा, गांव के डांड तक हमारा राज, उधर उन का।

मनोहर को सारी रात बेचैनी रही। पड़ा तारे गिनता रहा। बहुत दूर तक अक्ल चलती नही थी, फिर भी ज़मीन-आसमान

के कुलाबे मिलाता रहा। जब ठंडी हवा लगती थी, सोचता था, दुनिया में लोग एक दूसरे से इस तरह क्यो नही मिलते कि छोटे-बडे का भेद-भाव भूल जाय, एक दूसरे के गले-लगे दोस्त हो, गर्दन नापने वाले दुश्मन नही। माजरा जैसा रग पकड़ रहा है, आखिर तक किसी की जान से गुजर कर रहेगा।

लेटे कुछ देर हुई कि एक नौकर आया। उसने कहा, गांव में किसी चिडिया को यह हाल न मालूम हो। जमीदार से कह आना दूसरे गांव का हमारा राज हमारे रिश्तेदार के यहां है। यहां मालिक के छोटे भाई आपसे मिलेंगे। जैसा-जैसा कहें करते जाइयेगा। यह कह-कर वह चला गया।

मनोहर फिर करवटें बदलने लगा। पुरवाई के झोके कभी-कभी झाडियो की खुशबू से लदे मस्त करते हुए आने लगे। आल्हा की धुन सुन पडने लगी। साथ ढोलक बज रही थी। कुछ देर बाद मनोहर अपनी उधेड-बुन में आ गया। जैसे भूल-भुलैयो में पड गया हो, निकलने का रास्ता न पा रहा हो। जी उकताने लगा। आंखो पर रात पार हो गई। पौ फटने की सूरत नजर आई। वह उठ कर गांव को चला।

२

जब घर आया तब भी चक्कियाँ चल रही थी। ढोर नही छूटे थे। पनहारिनें पानी को नहीं निकली थी। गांव के बाहर एकाध स्यार तब भी चक्कर काट रहे थे। घरो के दरवाजे नही खुले थे। मनोहर रात भर का जगा था। किसी को आवाज नही दी। चौपाल की खाली चारपाई डाल कर लेट गया। देखते-देखते आंख लग गई। आज पाठशाला जाने की उतावली न थी। घर की तरफ से न निश्चय था, न अनिश्चय। बम्बई जायगा या घर रहेगा, फैसला न कर सका था।

घर के लोगो ने उठ कर उसको लेटा हुआ देखा, तो जगाया नही। उसकी अम्मा को कुछ झझक हुई, मगर वह भी जगने तक मुँह दबाए रही। दिन का काम, पीसना, भैंस लगाना, कण्डे पाथना, पानी भरना, रोटी करना आदि होता

रहा। कभी-कभी मनोहर के सोते रहने पर फ़ब्तियाँ चलती रहीं। जब जगा तब दुपहर थी। नींद के आ जाने से बदन हल्का हो गया। जंगल गया और दातोन के लिये नीम का एक गोजाह ले कर लौटा। फिर डोल, लोटा, डोर, और धोती ले कर पक्के कुएँ को चला। नहा धो कर घर लौटा, मकान के भीतर देवता को प्रणाम करने गया, कुछ देर बैठा माला जपता रहा, फिर चन्दन लगाए हुए लौटा और चौके को गया। उसकी माता ने थाली परोस दी और बैठी मक्खियाँ उड़ाती रही। जब आधा भोजन कर चुका, एक गिलास पानी पी लिया, तब उसकी माता ने पूछा, "क्यों भैया, आज आते ही सो गए? पाठशाला नहीं गये।"

मनोहर ने जवाब दिया, "कुछ ऐसा ही पेंच पड़ गया है। तुमसे कहूँगा। बड़ी बात नहीं, एक बतगड़ है।"

माँ मुँह देखती रही। आग्रह आँख से फूट कर निकल रहा था। मनोहर ने भोजन समाप्त किया। हाथ-मुँह धोए, कुल्ले किए। माँ ताक पर थी, इसलिए घर की खिड़की से गोड़े की तरफ गया, इशारे से माँ को बुला कर।

उधर चारो तरफ़ से चारदीवार बीच में तीन-चार नीम के पेड़ हैं, छाया किए हुए। दो एक चारपाइयाँ पड़ी हैं। औरतों के विश्राम की जगह है। बाहर से कोई देख नहीं सकता। जैसे छोटा नीम का एक बाग़ीचा हो। एक तरफ एक

कुआँ है। पानी खारा होने के कारण चौका-टहल और नहाने-धोने के ही काम में लाया जाता है। खुली जगह होने के कारण पुरवाई के विरामपूर्ण झोके आ रहे हैं। नीमो पर चिडियो की चहक दिन भर सुन पडती है।

मनोहर पडी हुई चारपाई पर बैठ गया। माँ भी एक किनारे आ कर बैठीं। सशकित दृष्टि से माँ को देखता हुआ कुल हाल मनोहर धीरे-धीरे बयान कर गया। माँ ने कहा, वाहर की वात है, घर के पुरखे यहाँ है नही, इसलिये ननदोई जी का कहना ही करना चाहिए।

मनोहर ने कहा, अम्मा! वात यह बडी पेचीदी जान पडती है। हम किसी अधिकार के आदमी हो, हमारे रक्षण के कोई नियम हो, उनका पालन होना जरूरी है, इस वात से इस का विरोध जाहिर होता है। ऐसी ही वात वम्बई में गुजरी, जिसके कारण हम लोगो को यहाँ चला आना पडा। किराए के जिस मकान में रहिए, किराया देते रहने पर भी जैसे अपना कोई स्वत्व न हो। पिता जी जहाँ नौकर है, वहाँ माह-माह काम करने और तनख्वाह लेने के अलावा उन की व्यक्तिगत कोई जिम्मेवारी नही। स्वत्वाधिकारी सेठ भी है जिनके वे नौकर है। किराये के मकान में स्वत्वाधिकार जमीदार का है जिस का वह मकान है। हमारा समाज इस तरह स्वत्वहीन गुलामो का एक समाज हो रहा है, और यह ब्राह्मणत्व! इस

पर भी तरह-तरह से नीचा देखने की नौवत आती है। अव इतर जन सर उठाने लगे हैं। हमारी अवमानना समाज की उन्नति का पहला साधन हो रही है। दूसरे हमारा ब्राह्मणत्व हमारी एक छोटी-सी पहिचान के सिवा, एक छोटे से दायरे में आ जाने के सिवा कोई ताकत नही रखता—दूसरे प्रान्तो में हम शूद्रो से भी वदतर समझे जाते हैं। आप को मालूम हो कि मकान-मालिक के इतर विचार के कारण हमने सर उठाया था, जिससे नीचा देखना पडा। समाज में उस की ब्राह्मण के लिए हुई मान्यता उसके पुरोहित के हक में गई थी। हम जैसे ब्राह्मण हीन रहे हो। जाति की आँखो में जातिगत अभिमान नही रहा। इस तरह आदमी लगा कर दूसरे का स्वत्व खीचना आदमी का अपमान है जिससे हम को सर उठाना पडा। तुमको भी कितना नीचा दिखाया जव उसने अपनी जुवान से अपनी ब्राह्मणी लगा कर कहा, हमारे घर में पूजा-दान के समय इन्ही का मान है, तुम्हारा नही, तुम न हो कौन नही, हम को क्या ज्ञान ? उस मकान में रह कर इज्जती सर किये रहने से बाज आये। मकान छोड कर चले आये। यहाँ वही माजरा है। अव अगर फिर किसी कारण से हमको गाँव छोड़ कर वम्वई जाना पडा तो हम कौन-सा मुँह ले कर जायँगे।

माता ने सुन लिया। देखते-देखते उनके हृदय की मिहनी

जैसे ऊपर को छलाग मारी, उन का सर तमाम आदमियो के ऊपर उठ गया । बडे ही स्नेह तथा गम्भीरता के स्वर से उन्होने कहा, बेटा मुझ को विश्वास है कि तू मेरे दूध की लाज रखेगा और इन कामो की तह तक पहुँच कर इन की ज़जीर तोडने के काम आएगा। अभी तो कच्चा बच्चा है। इन तमाम लांछनो को चुपचाप सर उठाए हुए तैयार होता कि एक वक्त तू इन की जडें काटे । दूसरा कोई चारा नही। हम एक मुद्दत से यह कसालें झेल रहे है। माँ से बेटे को वरासत में जो बातें मिलती है, वे हमारे कौम की गर्दन झुका देने वाली हैं । मुसलमानी ज़माने से जो अपमान होते आये है, बेटे, तू अभी बच्चा है, तुझ से कहने-लायक नही, सिर्फ तैयार होता जा कि माँ के सपूत का जवाब दे—वे बातें दुधारी तलवार है, मत समझ की तेरी माँ, तेरी बहन एक धर्म के रिश्ता के सिवा और कुछ रखती है । मजबूरी के सिवा मरदो के हाथो उनके और भी जो अपमान होते है वे सैकडो बिच्छुओ के डक मारने से ज़्यादा जलन वाले और जहरीले है । मरदो की आंख के नीचे उनके अपमान हुए है और मरदो के हाथ-पैर नही चले। हम पीढ़ियां लिख रखते हैं । हमारी माँ का कहना था सौ पीढ़ियाँ बीत चुकी है, यह तैतालीसवी पीढी के बाद । हम उस को भगवान को अर्पण कर देते हैं और बाकी पीढियाँ चलती हुई बाधे रहती हैं । यही कामना दिन-रात रहती है कि नारियो

का अपमान है, हे भगवान्, बदला चुकाओ। सिर्फ बदले की आग धधकती है।

मनोहर चुपचाप सुनता रहा। कहा, माँ मैं तुम्हारा योग्य-पुत्र होने की कोशिश करूँगा।

कह कर वह उठ खड़ा हुआ और बाहर चला गया।

*

३

गांव में चारो तरफ हरियाली ही हरियाली है । अरहर और ज्वार के पेड इतने बडे हो गये है कि उनसे तमाम खेत हरे-भरे नजर आते हैं । धान भी दूसरो की हरियाली से होड कर रहे हैं । सन की तो बात ही नही । पौधे मुट्ठी भर रोज बढते हैं । सबसे ज्यादा ऊँचे वही दिख रहे हैं । बागो में घास भी घुटना छूने लगी है । गांव के लडको की डोर फूट के खेता में लगी है जिनकी ककडियां उतर कर आने लगी हैं । क्षण भर में चारा-पानी हो जाता है । सीचने की कही चिन्ता नही । मकान छाए-छोपे जा चुके हैं । किसान आराम की सांस ले रहे हैं । बडे-बडे आदमियो की चौपालो में दो-दो, चार-चार, छ -छ आदमी बैठते है । बाजरे की खेती कौन-कौन करेंगे इसकी बात-चीत हो रही है । जमीदार का मकान चापलूसी का अड्डा

है। मनराखन खासे अच्छे पलग पर क़ालीन बिछाए बैठा हुआ है, सटक पी रहा है। कुछ फासले पर साधारण-सी नगी चारपाई पर सिपाही बैठा है, सरहाने के सहारे लट्ठ रखे हुए। कुछ किसान जो साधारण जातियों के हैं, चौपाल के चबूतरे पर छप्पर के नीचे उकड़ूँ बैठे हुए है। आशा है, मालिक पी चुकें तो वे लोग भी चिलम पिएँ। चापलूसी में एक-दूसरे से तेज़ पड रहे हैं। बड़े मालिक बैठके में आराम कर रहे हैं। मनोहर दरवाज़े की नीम की छाँह से गुज़रता हुआ चौपाल पहुँचा। जिस चारपाई पर सिपाही बैठा था उस पर बैठने को हुआ। ज़मीदार का सिपाही सरहाने की तरफ़ सरक गया। बैठने के साथ मनोहर का कलेजा भी जैसे बैठ गया। मनराखन ने उस को सिर्फ़ ऊँचे से जैसे एक दफ़े देख लिया और धीरे से सटक गुडगुडा दी। सिपाही को हिम्मत हुई वह सरहाने की तरफ़ सरक गया, मुस्कराया और मनोहर को देख कर कहा, आओ बैठो। रोज-रोज का अभिवादन गाँव के ज़मीदारी प्रकरण में नहीं भी रहता।

मनोहर ने देखा, हिम्मत बँध कर भी ढीली पड़ जाती है। ऐसा बधान है जो उखाडा नहीं उखडता। आज इतनी ही देर के आवेश में उस की निगाह में वह ताक़त आ गई है जो हर एक की सूरत का जिन देख लेती है और समझ जाती है कि यह आदमी जान-बूझ कर कमज़ोरी का शिकार बना हुआ है। यह

उस समय की बात है जब देश में राजनीतिक सस्थाएँ प्रबल नही थी। सरकार के यहाँ रियाया की तरफ से जवाब देने वाले जमीदार ही थे।

सिपाही ने मुस्करा कर पूछा, आज दुपहर-दुपहर कैसे आए ! ऐसे वक्त, गाँव में कभी तुम्हारी चिडिया भी नही दिखी।

मनोहर ने कहा, पाठशाला नही गए। मनराखन से कुछ काम है। सिपाही ने लोक लिया। काम की बात करते हो तो हम से पूछो। हम इन के पिता से करेंगे। खेल-कूद वाली बात हो तो इनसे करो। पहलवानी यह करते नही, जरूरत पडेगी तो हाँ, दो-चार पहलवान ला देंगे। यह इन का पानी चढा रहने के सिवा उतर न जायगा।

कह कर सिपाही हाथ में अपनी लाठी उठा कर उसकी बँधी राखी खोलने लगा कि फिर सुधारकर बाँध दे।

लागन बोल मनोहर को चुभा। उसने कहा—विजय सिंह, हम तुम्हारे पास नही आए और चारपाई मे पायते ही बैठे है और अभी तक वह जमाना नही आया कि हम लोगो से तुम हाथ बाँधे हुए न पेश आओ।

विजयसिंह भी नौजवान है। तन्दुरुस्ती वैसी अच्छी नही। जमीदार का सिपाही, लत लुच्चई की पडी हुई। जवानी में जैसे चूसा आम हो। मनोहर की तन्दुरुस्ती से

खार खाता था। आज मौके पर पा कर बुखार उतारा। मनराखन अमीरज़ादे की तरह सटक पीता हुआ कृपा की दृष्टि से रह-रह कर मनोहर को देख लेता था।

पहले जो हिम्मत पस्त हुई थी बगावत में बदल गई, मगर सँभाल कर उसने सिपाही से लाठी ले ली। ढीली पकड़ी लाठी विजय के हाथ से निकल गई। उस को अपने क्रोध के कारण डर हुआ। साथ ही चीख निकली—अरे अपमान कर डाला!

इन्द्रमन लोध उन बैठे आदमियों में था। बिना कहे उस से नहीं रहा गया। उसने कहा,—मालिक तुम तो हवा से बिगड़ते हो। इन्द्रमन को जलन थी। सिपाही ने उन की बहन की अस्मत बिगाड़ी थी। रोटी पड़ने के डर से उसने किसी से कहा नहीं। ज़हर के घूँट पी कर रह गया। आज एक मौका हाथ आया।

विजयसिंह इसको ताड़े बिना न रहा। मगर तरह दे कर बात बनाई। कहा, सावन का अँधा हो रहा है? हरियाली झूमती है। लाठी जमींदार की, यह देख, हाथ खाली है, कह कर अपने हाथ दिखाए और हुक्म दिया, झपट कर छीन लाठी।

इन्द्रमन की कुल नसें ढीली पड़ गईं। दूसरी सवारी गठी देखी। मनोहर से कहा, रखिए महाराज, लाठी उधर, जिनकी है।

इन के लिए, जब यह अपने आये हैं, एक लौंडा काफी है, तुम्हारी इन की हाथी और मेढे की जोड है ।

मनोहर लाठी लिये ही रहा । मनराखन इन्द्रमन की बात पर जगे । आँखें तरेर कर कहा, तुम्हारे लिये ठाकुर ही हैं, कायदे के खिलाफ कैसे बोलते हो ?

इन्द्रमन ने कहा, और जो यह पांयते बैठे हुये हैं, यह कौन हैं ? इनको तो विजयसिंह ने बेबात-की-बात में ले-दे डाला। मनराखन उठ कर खडे हो गये । कहा, सूद बिना जूतों के सीधा न होगा । कह कर ताव में आ कर लतखोरे तक लपक कर जो जूता उठाया वह इन्द्रमन ही का था ।

इन्द्रमन ने कहा, मालिक, ए, राम के हाथ ऐसा फैसला है । यह जूता हमारा है ।

मनोहर उठ कर खडा हो गया। मनराखन से कहा, चलाओगे तो पहले हमी को लगेगा, इस को डाल दो।

मनराखन ने जूता डाल दिया ।

मनोहर ने कहा, यह लो अपनी लाठी । मनराखन ने लाठी ले ली । मनोहर कहता गया, गाँव के जमींदार का राज आप लोगो के यहाँ रहा । बाहर का हमारे रिश्तेदारो के यहाँ । उस रोज की बाजार वाली बात न भूलो । तुम्हारी अगर वहाँ तक बिसात हो तो अपनी कर गुजरना । हमारा वहाँ का हिसाब यहाँ के जमीदार के साथ नही रहा ।

उस वीर के सामने मनराखन की हिम्मत पस्त हो गई। जैसे किसी ने नजर बांध दी। मनोहर उतर कर सीधे घर चला।

बड़ा बुरा रवैया है भैया, ठहर जाओ, हम लोग भी चलते हैं, कहते हुए किसान भी अपने-अपने जूते पहन कर चौपाल छोड़ कर चल दिये। क्षण भर में जैसे समाँ बदल गया। मनराखन और विजयसिंह के मुँह पर मक्खियों ने कई चक्कर मारे।

मनोहर की नसो में तनाव आ गया था, परन्तु भगवान के भीतर वाले कमरे में बैठ अपने को शान्त कर लिया, और समय से पहले तीसरे पहर के ढलते-ढलते अपना लँगोटा-जाँघिया ले कर अपनी फूफी के घर के लिये रवाना हो गया। कुछ गर्मी आँख में थी, वह उसके चरित्र और स्वास्थ्य के कारण भी, वह सर दवाये हुये भरसक निगाह नीचे से निकाल रहा था। चलते हुए भीटो को बाएँ छोडा। नाला मिला जिसका पानी वह चुका था। उससे निकल लोमडी दूसरी झाडी की ओर भगी जाती दिखी। देखा, गर्मी के हरे-भरे जवासो के पौधे पानी के पडने पर झुलस चुके थे। उन के बीच से हरी घास ने सर उठाया था। कुछ आगे बढा, तो कमर तक बढी भजूर से एक चौगडा लोमडी के घुमते ही

निकल कर भागा और कूदता हुआ बग़ल की दूसरी झाडी में जा छिपा। मनोहर क़दम बढाता गया। कुछ आगे उस के फूफा का एक बाग़ मिला। उस गाँव में उन के दो-ढाई-सौ बीघे बाग़ात है। यह बाग़ भरा है। फिर भी रोएँ और बबूल के पेड अधिक हैं। गाँव की जमीदारी से हर-तीसरे साल हजारो के खदरो पेड उस के फूफा जमींदार साहब बेचते हैं, जिनमें सौ पचास रुपये के किसानो के भी पेड पड जाते हैं। गाँव के किनारे का पक्का ताल और सकटेश्वर महादेव का शिवाला मिला। यह भी उसके फूफा लोगो की कृतियां हैं।

आगे गाँव आया। गलियारे से होते हुए मनोहर अपने फूफा की हवेली की तरफ चला। पहले ही रामसिंह के मुहल्ले वाली राह छोड दी थी। घर पहुँच कर फूफी, फूफा, फूफा के भाई और उनकी स्त्री आदि गुरुजनो के पैर छुए। फिर दरवाजे की बडी चौपाल में आ कर चारपाई डाल कर बैठा। उसके फूफा के छोटे भाई रामशकर है। गाँव का कुल हाल इसने उनसे कहा। राज चला देने के इरादे से वह उस को ले कर एक काछी के यहाँ गये जो उनका किसान है। रामशकर जी ने मनोहर से कहा, यहाँ जितने हमारे किसान है, सब हमी-हम है। तुम यही समझो, यही तुम्हारे रिश्तेदार और जमीदार है।

मनोहर पीता गया।

रामशकर ने आवाज दी। काछिन बैलो को सानी दे रही थी, हाथ में खली और भूसा लपेटे बाहर निकल आई।

रामशकर जी ने उसके गुप्त अग की ओर उँगली उठा कर कहा, यह तुम्हारी फूफी है और जमींदारिन, इनके सरपरस्त है सरकार, कहो हाँ।

मनोहर ने कहा, हाँ। मगर सिमिट कर रह गया।

रामशकर जी ने दूसरा दृश्य जो उन का असली है दिखाया। कहा, काछिन भउजी, वही आज फिर दे जाओ। यह तुम्हारे भतीजे हैं, इन का कुछ आदर-स्वागत करना है।

काछिन ने कहा, ऐ, अभी तो बतियाँ है। जब बढेगी तब देंगे। करेले की बेल तो उजाड दी गई। पहले की लगाई थी। कुछ मिर्चे होगे और कुछ ककडी की वतियाँ। कोहडा भी अब नही रहा, और इस साल हमने कुछ लगाया नही।

रामशकर ने कहा, मसालेदार ककडी की जैसी तरकारी दूसरी नही होती, वही दे जाना।

मनोहर ने देखा, यह इनका असली रूप है। कुछ कहा नही, पीछे लगा उनके साथ चला गया। रास्ते में उन्होने कहा, यह राज है। अब तुम हमा` आदमी हो। रामसिह के यहाँ खबर भेज दी जायगी। वह हाथ जोड कर पहले पालागन करेंगे, तुम आशीर्वाद दोगे, फिर वह तुमको लडायेंगे। अपना उस्ताद-वाला राज तुम पर रखेंगे। जब लौट कर आओगे तब रामसिह का राज हमारे राज में रहेगा। यह वर्ताव है। इसके बिना चलन नहीं चलता। जमीदार राजा है। उस का हिसाव पहने।

सरकार के यहाँ उस का कहना। वह नेकमाश को बदमाश करार दे सकता है। सरकार उसकी बात मानेगी। बदमाश की निगरानी वह अपने जिम्मे ले सकता है। सरकार को उस पर विश्वास है। सरकार से समझौता उसी का होता है, इसलिये मुख्यत तुम्हारे सर दो है, सरकार और जमींदार। इसको कभी न भूलो। यह लकड़ी हाथ से गई कि दुनिया में कही भी थाह न मिलेगी। अब आओ, अपना काम देखो।

५

रामसिंह बैठे थे। पक्के गोले से कस्बे को गाडी ले जाते हुये बरसात में और सहूलियत थी। देहात के लोग घोडो पर सामान लाद कर आते थे, गाडियाँ बन्द रहती थी। लिहाजा माल बाजार में कम पहुँचता था। रामसिंह गाडी ले जाते थे, माल अधिक बिकता था। आजकल लालोलाल है। खोए की बर्फियाँ बनवा ली है, जलपान होता है और ठडाई में पच्चीस बादाम और पडने लगे है। घी आना पाव और खाने लगे है। सबसे बडी सहलियत यह हुई कि मनोहर-जैसा शागिर्द ! क्या चढे फिरने का घोडा मिला है। गाँव मे कई जगह गरदन उठा कर गाल बजा चुके है। इसी का पानी चढा है। लोग किस-किस मनोवृत्ति क होने है, इस का फैसला बडे-बडे दार्शनिक नही कर पाये। एक पहलू से उस की अच्छाई साबित होती है ता दूसरे

से बुराई। जिस हद तक रामसिह को भला आदमी कह सकते हैं, उसी तक बुरा भी। गर्ज़ क्या है। रूह निकालना पाठक या दर्शक का काम है। आखीर तक एक हासिल होगा ही। मगर किसी गुमराह को समझ की कमी के कारण कुछ का कुछ सूझ जाय तो वह एक उपन्यास का ही प्रकरण होगा जैसा कि होता जा रहा है।

ठढाई के चढते हुए नशे में रामसिंह आँखें खोल-मूँद रहे थे कि ज़मीदार का सिपाही लट्ठ का बंधा गूला ज़मीन पर दे-मार कर रामसिह के साधारण ज़मीदार को साथ लिये बोला, देखिये ठाकुर साहब, राज ज़मीदार का, भतीजा ज़मींदार का, आपकी मातहत (रामसिह के ज़मीदार को इशारे से बताते हुये) आ रहा है, लडाइयेगा, भला-बुरा जो कहना हो, आपकी मार्फत कहिएगा। लड़का है, जैसा उन का, वैसा ही आप का। चोट न लगे, ख्याल रखिये। सलाम।

सिपाही चला गया। रामसिंह ने फिर एक बार आँखें खोली और मूँदी। उनके ज़मीदार ने ललकार कर पूछा, ज्यादा चढ गई क्या ?

रामसिंह ने लापरवाही से फिर आँखें खोली और मूँदीं, और तख्त की एक बग़ल थपकी मार कर बताते हुए कहा, आओ, बैठ जाओ।

जमींदार यमुना प्रसाद बैठ गये। बडे जमींदार की झेंप उतारने के लिये कहा, ये शान हैं।

रामसिंह ने भी झेंप उतारी, कहा, कहो तो हम भी जवाब भेज दें।

छोटे जमींदार के बाजी हाथ आई। कहा, बस हमारे दरवाज़े चले चलो, बात हम यहाँ न लेंगे, नहीं, कहो, यह जमींदार की चौपाल है।

रामसिंह की फिर घिग्घी बँधी। दब कर मंजूर कर लिया। सोचा, यहाँ से वहाँ तक चल कर व्यर्थ मिहनत करनी है। हम मानेंगे तो यह जी न छोडेगा।

जम कर जमींदार ने कहा, कहो, सिपाही तो हमारे हैं नहीं, दो सौ बीघे के पट्टीदार हैं। मगर गुल खिलेगा। कुछ हमारी भी नजर ?

रामसिंह कुछ और बैठे, यह जमींदार महाशय भी ब्राह्मण थे। रूढ़ि ऐसी कि घूम-फिर-कर उसी पर आना था। सोचा, वह भी कौन, काम आये, न आये दूर का रिश्ता, फिर भी ठाकुर है, पानी गहरे का आया तो देख लिया जायगा, जिले का भी राजसी ठाट हमारा ही है। बोले, क्या हम इनके घर इनको बुलाने गए ?

जमींदार ने कहा, यह तो हम पूछेंगे, यह तौर जमींदाराना

है, अपने ढग से चलो, जैसे रिपोर्ट कर रहे हो। यही तो विगाड की वुनियाद है।

रामसिह ने कांख कर कहा, अब और तो हमसे नही उतारा जाता।

जमीदार ने कहा, तुम अपनी तरफ से कैसे दूसरे आदमी को विना जमींदार की सलाह रात के वक्त लडने के लिये वुलाओगे ?

रामसिह ने कहा, जव इतनी-सी वात तुम्हारी समझ में नही आती तव हम और क्या समझावें ? अगर इससे काम चल जाय तो अच्छी वात, नही तो जैसे गांव दूसरे जमीदार का राज लिया है, वैसे ही यह लो (हाथ उठा कर खाली मुट्ठी खोलते हुये) यह भी वैसा ही राज है।

जमीदार ने कहा, तुम किसी जमींदार का राज यों नही दे सकते। यह राज जितैला है। अगर ऐसा ही करना है तो उस जमीदार को वुला लाओ। तुमसे अदा करते नही वनता।

रामसिह तश में आ गये। कहा, अच्छा तो जाओ।

जमीदार भी गर्म पडा। पूछा, जगह किस की है ?

रामसिह को जवाव देते पहाड जान पडा। खुद उठ कर चलने को हुए।

जमींदार ने कहा, हमारी वैठक ही मे जा रहे हो न ?

रामसिह को ताव आ गया। जमीदार को पकड कर उठा

लिया, और पास ही के उनके मकान के पास ला कर चौपाल के पास पडी चारपाई पर डाल दिया और कहा, अब तो हो न अपनी चारपाई पर।

जमीदार को बहुत ही बुरा लगा कि पूछता ही जा रहा है, चढ्ढी ही गाँठे हुए है। रुख फेर कर कहा, इस का जवाब ही मिलेगा।

रामसिह नशे में थे ही, ठपाक से आल्हा की लडियाँ गाने लगे—

जिनकी माता ना हरजाई, उनकी वार-वार बलि जाय।
जिनकी माता कायर जन्मे, उनको रोते रात सिराय।
जनम हुआ है छत्री घर तो ज्वानी जूझे खेत अघाय।
जनम हुआ है कायर घर तो बैठे घर अमरौती खाय।

मनोहर समय पर जोर करने के लिये गया। उसको मालूम हुआ, अखाडा नही लगेगा। वह लौट आया। मन्दिर के चबूतरे पर कसरत करके दूध पी कर आराम करने लगा। दस-ग्यारह बजे बियारी के वक्त तक जमीदार से बातचीत होती रही। उस की जबानी यह मालूम करके कि अखाडा नही लगा, जमीदार चौंके। उनको यह हाल मिल चुका था कि बाजार में मनराखन की मार्फत मनोहर की रामसिह से भेंट हुई थी। उन्होने कमर से पच्चीस रुपये निकाल कर मनोहर को दिये और कहा, सवेरे रेल से तुम अपने बाप के

पास चले जाओ, मकान में हम खबर भिजवा देंगे, देख-रेख किये रहेंगे, यह मामला तूल पकड़ेगा। मनोहर ने मंजूर कर लिया। कहा, किसी कारण मेरी कहीं को गैरहाजिरी किसी को खटके तो भी आप समझा दीजियेगा, कोई चिन्ता न करें, मैं अम्मा की बात भी पूरी करने के प्रयत्न में हूँ।

जमीदार ने इसका सम्बन्ध भी अपने अनुकूल लगाया।

६

रामसिंह के पास कोई आदमी न था। वह मील भर के फासले के गाँव राजपुर पैदल चले गये। आल्हे की कड़ी खतम होने के बाद उन का जी डरा कि कहीं नीचा न देख जाना पड़े। घर में कह गये थे कि अखाड़ा नहीं लगेगा।

गाँव में पूछने पर मालूम हुआ, मनराखन तीतर को दीमक चुगवा रहे हैं। पूछने-पूछने वह बागों के उस पार वाले किनारे की बाड़ियों में मिलते हुए दीमक के ठिकाने पर गये। मनराखन ने बातचीत हुई। जमीदार की आदत जैसी, मनराखन बदगी-सलाम के बाद खामोश रहा। रामसिंह ने ठकुराई चाल से प्रश्न किया, कहो, मनोहर के क्या हाल है ?

मनराखन ने खानदानी मित्रता के नाते जवाब दिया, वह तो गण्डा जान पड़ता है।

रामसिह—हमको कुछ खास बातें मनोहर की बतला दो।

मनराखन—उस्ताद हमारा ऐसे ही आदमियो से काम रहता है। टेढी लकडी ही हम सीधी किया करते हैं। राज हम और कुछ नही देते। क्योकि गाँव के भलेमानुस हैं, टेढे पडे, घुमाये-फिराये गये, फिर सीधे हो गये। जमींदार की यह रोज की क़वायद है।

रामसिह—हम इसलिये भी आए थे कि तुम्हारा राज है, तो चले चलो, बुला लो, अभी गया न होगा, हम तुमको तुम्हारा राज दे दें। फिर किसी दूसरे जरिये हमारे यहाँ आवेंगे तो यह सबूत काफ़ी है कि तुम्हारी मार्फ़त वह आए थे।

मनराखन ने समझने की कोशिश की, क्योकि दुपहर में मनोहर ने उससे कहा था, गाँव के बाहर का राज हमारे रिश्तेदारो का है। रामसिह के आने का कारण भी उसकी समझ में आ गया कि वहाँ के जमींदारो में खटपट हो गयी है। वह खामोश रहा। रामसिह को उससे कुछ झिझक हुई। कहा, व्यवहार वह जो न छूटे। दाँव वह जो वक्त पर काम दे। इतने दिनो से हम उसको लडा रहे हैं इसके लिए भरोसा तुम्हारा था।

मनराखन—चलो, सिपाही भेज कर बुलवा लेते हैं, और कह देते हैं कि तुमको इनके यहाँ लडने के लिए जाना है तो इनकी मर्ज़ी के मुआफ़िक ही रहना होगा, नहीं तो अपना रास्ता नापो।

मेंड के किनारे उकड़ू बैठे तीतर चराते हुए मनराखन ने पिंजडे

में तीतर को ले लिया और झूमता हुआ गाँव को चला, साथ में रामसिह ।

मनराखन के दरवाजे, बैठक जमी । अभी सूरज डूबा न था । सिपाही को हेच-खाया समझ कर मनराखन ने एक किसान को बुला लाने के लिये भेजा । तब तक व्यवहार की इधर-उधर की बातें होती रहीं जो कोरी बातें हैं । किसान ने लौट कर खबर दी, मनोहर घर में नही है ।

रामसिह चलने को हुए । कहा, जमीदार का मामला है, भाई पीठ बचाए रहना । हमारी पीठ लगी तो तुम्हारी भी लगी ।

मनराखन ने बढ़ावा देकर कहा, इस मामले में उस्ताद को छूने वाला कोई नही । कोई ऊँची-नीची बात गुजरी तो साले को बँधवा कर भिजवा दूँगा, खातिरजमा रहे ।

रामसिह को प्रबोध हुआ । कहा अब सूर्य अस्त होने को है, चलना चाहिये । बड़ा बुरा हाल हो रहा है, और इसी बात को ले कर । बैठे-ठाले एक बला गले लगी ।

मनराखन ने फिर ढाटस बँधाया—एक चड्ढी गँठवाते हैं बहुत जल्द । जब उन्होने हमारा राज नही माना, तो हमारा अपमान कर चुके । यह है कि अब आगे से होशियार रहना चाहिये कि इस आदमी की पैठ न हो ।

मेहमानदारी बढ़ाने की गरज से मनराखन ने एक पासी को बुलाया और गांव के किनारे तक छोड़ आने की आज्ञा दी ।

रामसिह ने इसको राजसी सम्मान समझा। उनको यह न मालूम था कि यह पासी बदमाश है। सीना ताने चले चले।

ठढाई छानकर यमुना प्रसाद दो-तीन और आदमियो के साथ उसी सीधे जगल में गये। निबट चुके थे कि रामसिह को बाग़ो के भीतर से एक आदमी के साथ आते हुए देखा। पडोस के गाँव का पासी, उसको सभी पहचानते थे। लोगो को देख कर पासी वहीं खडा हो गया। रामसिह से दबग गले से कहा, अब चले जाओ ठाकुर। लोगो ने यह भी सुना। रामसिह अपने रास्ते चले गये। घर पहुँचकर दरवाजा बन्द कर लिया और लडको को समझा दिया कि कोई आवे तो कह दें कि अखाड़ा न लगेगा।

मनोहर से मिल कर बातचीत करने से पहले जमीदार रामराखन का एक और निश्चय हुआ, जब चौपाल में वह बैठे थे, दिया-बत्ती को घंटे भर हो चुका था, यमुनाप्रसाद आए, कहा, पहलवान ने जमीदार को मानते हुए भी नहीं माना, खास तौर से आपके बारे में। रामराखन ने कहा, हम-तुम एक ही हैं। यमुनाप्रसाद ने जवाब दिया, हम अकेले पड़ते हैं और गांव के मामले में तुमको बड़ा मानते ही हैं, और तुम्हारी मदद भी हमको दरकार होगी। तुम बात दो तो कुछ खा-पी लिया जाय, और इस सर चढ़े को जमीन भी दिखा दी जाय मगर अकेले हैं।

रामराखन ने आहिस्ते से पूछा वह पेंच भी बता दो जिस पर चढ़ा है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, जब तुम्हारी पुकार होगी, तुम खुद कुल समाचार सुन लोगे।

यमुनाप्रसाद ने फिर बड़े जमीदार को समझाते हुए कहा, भाई देखो, आए तुम हो, हमारा आदमी अब भी हमारा आदमी है। वह तुम्हारा आदमी है, लेकिन इस मामले में तुमसे कट चुका है। उसके खिलाफ कोई कार्रवाई करो तो हमसे जरूर पूछ लो। साथ तभी पूरा। नही, तो दाँव खाली जायगा। गाँव के और दस आदमियो का दवाव होगा, तुम कुछ कहोगे, हम कुछ कहेंगे।

यमुनाप्रसाद ने फिर दव कर कहा, हमारी कोई शान जमींदारी वाली न रही ?

रामराखन ने ढाढस बँवाते हुए कहा, जो हाल तुम्हारा है वही हमारा भी। जिले के दूसरे बड़े जमीदार के सामने हमारी भी कोई हक़ीक़त नहीं गोकि हमारे सीधे तअल्लुक़ हैं। ऐसी बात पडी तो वह हमसे बातें लेगा। जमींदारी के मामले में सवालों का जवाव देने के लिये जब जिले से दो ही एक आदमी खडे होंगे तब कई मानो में हम नही आ सकते। लिहाजा बात हमसे कर लो तो बल न पडेगा, बल्कि बल बढ़ेगा।

यमुनाप्रसाद ने कहा, आज मार्के का गठना गठा है। हम देवीप्रसाद और शिवकुमार जगल गये थे, उस वक़्त पहलवान राजपुर के बदमाश बहादुर के साथ चले आ रहे थे। हमसे बात-चीत होने के बाद ही जान पडता है वह राजपुर गये थे। वहाँ के जमीदारो से कुछ भला-बुरा कहा होगा। उन का बदमाश

पासी साथ ले कर आये। दोनो साथियो ने पासी को देखा है। इतने से कोई मामला गांठ दिया जायगा तो गठ जायगा।

रामराखन की लार टपकी। कहा, इधर दो-चार हज़ार इकट्ठे कर लिये होंगे। चलता है तो जैसे धरती धमकती है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, हां, पांचो घी में हैं। आजकल दूनी खुराक है। कड़खे ही बोलता है।

रामराखन ने कहा, तो मौका न चूकना चाहिये। तुम्हारा कोई आदमी भी है?

यमुनाप्रसाद ने कहा, शिवकुमार को तैयार कर लिया जाय, इसने देखा भी है, मुद्दई हो जाय। हम दोनो गवाही में रहेंगे। एक गवाह को वह जानता है, एक तैयार कर लिया जा सकता है अगर हम गवाही न देना चाहेंगे।

रामराखन ने कहा, शिवकुमार कमजोर है। वादी कुछ मालदार होना चाहिये। अच्छा सुनो, तुम्हारे हल्के में मिश्र जी रहते हैं। हमारे मान्य हैं और लक्ष्मी की कृपा भी है। तुम चले जाओ, उनको बुला लाओ। तब तक हम मनोहर को समझा लेंगे, क्योंकि पेशवन्दी जरूरी है।

यमुनाप्रसाद माधव मिश्र को बुलाने के लिये गये। रामराखन मकान के अन्दर अपने घर में गये और चबूतरे पर वमरत करते हुए मनोहर को बुला भेजा। पिछले अंक में लिखी हुई बातें

मनोहर से करके अपने पलग पर आ गये। आधे घटे के अन्दर यमुनाप्रसाद मिश्र जी को ले कर जमींदार साहब के कमरे में दाखिल हुए। इन तीनों के सिवा वहाँ और कोई न था।

रामराखन ने आदर से मिश्र जी को बैठाया। सम्मान से उभरते हुए भी, जमींदार-श्रेणी को मिश्र जी काल जैसा देखते हैं। दुनियावी कामकाज में उनकी मान्यता काम नही करती और अगर जमींदार के इशारे पर न चलें तो गाँव में महीने भर भी गुजर न हो, ताजीरात हिन्द के किसी दफे के शिकार हो और जेल की हवा खाएँ। कई दफ़े इसी मान्यता के कारण जाते-जाते बचे। ऊँचे दर्जे के ब्राह्मणत्व का ख्याल नही। किसी भी मामले में नही लडता। उस का हकदार मिश्र घराना भगवान तो क्या शैतान के सामने भी झूठ नही कह सकता, यह भावना उठ गई है, जैसे एक गाडी लीक-लीक चली जा रही हो, यह हाल है। मरजाद के कारण उनको कोई फायदा नही पहुँचता। जमींदार दबाने के काम में उनसे हर तरह की मदद लिया करते हैं। बुलावे के साथ उनके होश हिरन हो गए, मगर चीं-चिपड़ न की। रामराखन के नाम से कुछ हिम्मत हुई। साथ चले आये।

रामराखन पहले यमुनाप्रसाद को एकान्त में ले गये। कहा, आधी रात लोगों की आँख बचा कर अपनी सीढ़ी इन को दे

देना, बाहर दीवार में लगी छोड़ देंगे और तीन-चार बजे के करीब चोरो का हल्ला मचा देंगे।

लौटकर उन्होंने मिश्रजी से कहा, मिश्रजी, जमीदारी के कार्य ही टेढ़े हैं। लेकिन मडप के नीचे थानेदार और डिप्टी क्या, कमिश्नर के बाप भी पैर नही रख सकते और वह मान नही पा सकते जो आप को मिलता है। आप खातिर जमा रखिये। जमीदार का साथ करनेवाला, जमीदार का आदमी, सरकार के खास आदमियो में है, उसका बाल बाँका भी नही हो सकता, कहने के मुआफ़िक पाँच सौ कम से कम बताइएगा, बल्कि और ज्यादा। सन्दूक के ताले-वाले तोड़ रखिएगा।

मिश्रजी अनुभवी आदमी, मुस्कराए। पूछा, किसी की शक्ल का बयान तो नही देना?

रामरतन हँसे। कहा, मिश्रजी जमीदार पर भी एक हाथ रखते हैं।

स्नेह से कहा, जाएँ दोनो अपनी हैं, यह उधर गई तो लाज गई, वह उधर गई तो भी लाज गई। आप तो जानते हैं बदमाश फँसाना और उसकी निगरानी रखना हमारा काम है, लिहाजा कहिएगा कि हट्टा-कट्टा आदमी था। कुछ और भी थे। अँधेरा पाख है, कुछ साफ़ नही दिखा।

*

लौटते-लौटते माधव मिश्र ने अन्दाजा लगा लिया कि इशारा किसकी तरफ़ हो सकता है। यमुनाप्रसाद ने बनावटी स्वरों को सहज बना कर कहा, सरकार का काम सरकार ही जाने।

माधव मिश्र मन मसोस कर रह गये। जानते थे कि गाँव के चौकीदार मघे हैं इन्हीं के जोतदार हैं। सिपाही, थानेदार भी इनके दरवाज़े उतरते हैं।

जब घर के पास आए, यमुनाप्रसाद ने कहा, रात बारह बजे आकर हमारी सीढ़ी उठा ले जाना, हम इसी जगह डाल देंगे। कह देंगे कि घर चू रहा था, मिट्टी लगाने के लिए सीढ़ी निकाली थी। दिन भर मिट्टी दबाई गयी थी। तुम यह न कहना कि सीढी तुम ले गये हो। सिर्फ शोर मचाना।

कहकर राम-राम करने लगे और दुबक कर घर घुसते हुए भक्ति

पूर्वक सुना गए, सरकार का काम सरकार ही जाने। मिश्रजी भल-मनसाहत के कारण मजूर करते हुए दुबक कर सोलह आने में एक आने रह गये। अपना जी लिये हुए घर गये और औरतो को समझाया, कही दीवार न सुन ले, सरकारी काम है, पिछली रात चिल्लाना है। आधी रात को हम बाहर जायेंगे और लौट आयेंगे। नही तो मरजाद न रहेगी। और बहुत कुछ करना होगा, लो, समझाए देते है।

एक कोठरी का ताला खोल दिया। बक्सो के ताले तोड डाले। भीतर का सामान उठा कर दूसरी जगह हिफाजत से रख दिया।

लौट कर औरतो से कहा, ए बातें है। नही तो मरजाद न रहेगी। कैद भुगतना होगा, और भी बेइज्जती हो वह थोडी।

घर में त्रास का वातावरण फैला। सिसकते हुए भी सबके मुंह बंधे रहे। इस परिवार में रोटियां शाम को ही खा ली जाती हैं, जिससे चिराग का तेल बचे। साधारण मजे में है। प्रतिष्ठा झूठी पड़ जाने पर भी बचाये रहने की सूरत में रहते है।

लड़के सो चुके थे। औरतें मसान-सी जगती रही। दस बजा, ग्यारह बजा, बारहे बजा।

माधव मिश्र दबे-पैर उठे और आवाज न हो, आहट न मिले, ऐसी सावधानी से दरवाजा खोला और बाहर निकले। जमींदार की दीवार की बगल रखी हुई सीढ़ी उठा ली और उसी कोठरी

के सीधे पिछवाड़े लगा दी। फिर वैसे ही दबे पैर लौट कर लेटे। सारी रात साँसत में पार हुई। चार बजे के क़रीब जोर का रोना-पीटना शुरू हुआ। पड़ोसियों ने सुना, मगर चुपकी साध ली। सवेरा न हुआ था इसलिए उन्होंने निकलना नामुनासिब समझा, डरे कि चोरों में शुमार होगी।

धीरे-धीरे पौ फटी। लोग जंगल को निकले। ढोर छुटे। रास्ते पर इक्के-दुक्के आदमी का निकलना जारी हुआ। माधव मिश्र सर लटका कर दरवाज़े आ बैठे। भीतर रह-रह कर चीख लगती रही। बाहर के लोगों को अभी तक अच्छी तरह न मालूम हुआ था कि मामला क्या है। माधव मिश्र ज़ाहिरा तौर से कहते न थे सिवा सर पीटने के और यह कहने के कि हाय रे लुट गये, करम-दंड है, मरजाद धूल में मिल गयी, गाँव छोड़ कर कहाँ जायें, हे भगवान्, बुरे का सत्यानाश कर, कहाँ सोया है, कन्हैया, गौ-ब्राह्मण बेक़सूर सताये जाते हैं, कंस का राज बढ़ा है, हे राम, फिर राक्षस छा गये, डूब रहे हैं भगवन् इस भवसागर में, उबारो, आदि-आदि।

इससे किसी की समझ में कुछ न आया सिवा इसके कि माधव मिश्र बहुत दुखी हो रहे हैं। भेद खुलेगा इस डर से लोग मुँह छिपाये इधर-उधर घूमते रहे। औरतों में कानाफूसी होती रही। आदमी मक्कार है, यह सब लोग जानते हैं, गाँव में यह खबर फैल गई कि माधव मिश्र के यहाँ कुछ हुआ है।

सूरज निकलने को हुआ, माधव ज़मींदार यमुनाप्रसाद के

मकान चले। खबर ले जाने वाले वहाँ दो-एक आदमी और थे। जमीदार ने माधव को देखते ही पूछा, क्या माजरा है, मिश्रजी?

माधव मिश्र ने कहा, मालिक! कही के न रहे।

जमीदार ने लोगो से कहा, भाई, वडे आदमी का मामला है, इसको देखना-भालना है। हाल मालूम हो जाने पर आप लोगो से राज खोलें।

यह कह कर तुरन्त बढे और रास्ते पर ही माधव मिश्र को लिया। और आओ, आओ' कहते हुए मकान की ओर न आ कर गलियारे की ओर बढे।

लोग चौकन्ने थे कि न जाने कौन-सा पहाड टूटे, आपस में बन लेंगे तब बना कर कहेंगे।

चौपाल की चारपाई से लोग-वाग उठ कर अपने घरो की ओर चले। यमुनाप्रसाद माधव मिश्र को लिए हुए गलियारे-गलियारे रामराखन के मकान आए।

रात भर प० रामराखन को नींद नही आई, कुकुर-निंदिया की तरह दो एक झपकियाँ ली, बाकी सारी रात इसको फाँसने और उसको खोलने में वीती।

धनी वर्ग की आमदनी का उपाय देहात में यही है। कौन परदेशी है, कितना कमा लाया, कौन किसान आलू या गन्ने की खेती से दो-चार सौ रुपये जोड चुका, कौन दुकानदार अपने व्यवसाय में फायदा उठा रहा है, ये लोग पूरी जानकारी रखते

हैं। उनके घरो के जवान बेटी, बेटो, पतोहू और दामादों को फँसा-कर रिश्वत ले-लिवा कर, या मुक़दमे लड़वा कर या गवाहियाँ दिलवा कर अपनी जेब भरते हैं।

रामराखन दातौन-कुल्ला कर चुके थे। दरवाज़े पर पानी सोखने का दाग़ बना था। यमुनाप्रसाद और माधव मिश्र को सामने की दूसरी चारपाई पर बैठाला। यमुनाप्रसाद ने कहा, काम हो गया।

★

६

मनोहर को रात तीन बजे रामराखन ने जगा दिया। समझा दिया, गांव के स्टेशन पर न चढ़ कर अगले स्टेशन पर चढ़े। चार कोस के फासले पर है। सबेरे पहुंच जायगा। आठ बजे गाडी वहाँ पहुंचती है। उसी से रवाना हो जाय और छ महीने तक कम-से कम गांव में मुंह न दिखाए।

मनोहर आग-बबूला था ही। उठ कर मुस्तैदी से चल दिया। सरायन के किनारे से कच्ची सडक गई है, उसीको पकडे हुए चला। बरसात में उसकी हालत अच्छी न थी, जगह-जगह गड्ढे पानी से भरे थे, मगर रास्ता-चलनेवाले के लिये राह निकल आती है। मनोहर पैर बढाता गया। पौ फटते-फटते आधा रास्ता तै कर डाला। उसको मालूम था, इस प्रान्त में बडे जगनी जानवर का डर नहीं, फिर भी भेडिये कहीं-कहीं बरसाती नदी और नालों के

किनारे माँदो में रहते हैं । एक डंडा लिए सजग राही, क़िस्मत का मारा हुआ चलता गया । कसरती जवान के लिये चार कोस का फ़ासला कोई दूर नहीं । ऐसे बदज़ातो से रिश्ता छूटा, इसकी ख़ुशी भी उमड पडती थी ।

उसको पछाँहवाली गाडी से जाना था बम्बई के लिये । वह गाडी तीन घंटे पूरबवाली गाडी के बाद आती थी । पूरबवाली का समय उसके स्टेशन पहुँचते हो गया । उसने देखा, सुबह की सुर्ख़ी के साथ छोटे से सुर्ख़ स्टेशन के मुसाफिरख़ाने में पूरब जाने वालो की भीड लगी है । वहीं तीन-चार खोंचेवाले भी बैठे हैं, किसी के पान और बीडी, किसी के पेडे और बर्फ़ी, किसी के तेल के सेव और चने भुने हुए लगे हैं । बाहर स्टेशन की तरफ नीले फूल की लता चढाई हुई सारे स्टेशन की दीवार पर छतर रही है । कई कुत्ते परम परिचितो की तरह बैठे देख रहे हैं । सामने फैला हुआ ऊसर । दूर तक निगाह चली जाती है । बीच में ऊसर का छोटा मगर पुराना बरगद का पेड देख पडता है, जिसके एक बग़ल एक बारहदरी है और दूसरी बग़ल एक पक्का कुआँ, सामने तालाब । आते हुए यात्रियो का तांता और गाडियाँ देख पडती हैं ।

घंटी हुई । सिगनल गिरा । टिकटवाला दरवाज़ा खुला । टिकट लेने वाले मुसाफ़िर एक दूसरे पर चढ गये । मनोहर खडा देखता रहा । उसको पछाँह जाना है । कुछ देर बाद मसूबा पलटा । बम्बई के कारनामे याद आए । ज़लालत से नसों में ख़ून दौडने लगा ।

क्या बम्बई में मुँह दिखाए, बाप की आँख का काँटा हो या धनिको के जाल में फँसे ?

इरादा पलटा। खून की तेजी धीमी नही पडी। अपने आप पैर उठे। यात्रियो के पीछे एक तरफ खडा हो गया। वे टिकट ले कर बाहर निकले। एक ने टिकट दिखा कर कहा, नम्बरदार, देखो तो, टिकट कहाँ का है। मनोहर के जले पर नमक पडा। मगर उसने यह न कहा कि वह नम्बरदार नही, न यही कि वह टिकट न देखेगा। नम्बरदार के लिए चढी चिढ को दबा कर धुँधले प्रकाश में पड कर टिकट दे दिया। यात्रियो के बढने के साथ बढता गया। झरोखे के पास पहुँच कर विना कुछ सोचे कहा, बनारस के लिए एक टिकट। एक नोट पाँच रुपय का दिया। टिकट के साथ कुछ पैसे वापस मिले, ले कर बाहर निकला। पान खाये, स्टेशन पर टह-लता रहा, गाडी डिस्ट्रिक्ट सिगनल पार कर आइ। यात्रियो की भीड बढी। बैठे लोग खडे हो गये। गाडी प्लेटफाम पर आ गई। मनो-हर बिना कपडे-लत्ते के, बिना लोटे-थाली के एक जादू का मारा जैसे, खिडकी खोल कर एक डब्बे में बैठ गया।

★

बातचीत तय हो गई कि पहलवान रामसिंह से पाँच सौ रुपये लिए जायँ। यमुना प्रसाद बुलाकर आपस में तय कर लें। अगर पहलवान रामसिंह राजी न हों तो रिपोर्ट कर दी जाय।

अभी तक चौकीदार के कान में बात न पड़ी थी। वह इस मामले से नावाक़िफ़ था।

यमुनाप्रसाद गाँव के भीतर गये और धीमे गले से पहलवान को आवाज दी। पहलवान भीतर थे। जमींदार का गला समझ कर बाहर निकल आए। यमुनाप्रसाद उनको बुलाकर गाँव के बाहर एक पेड के नीचे ले चले। छाँह में दोनों बैठे। यमुनाप्रसाद ने कहा, पहलवान, जमींदार का मामला है। सरकार भी जमींदार है, आपका पक्ष लेने के लिए आपका रिश्तेदार राजा रईस कोई गाँव में खड़ा न होगा। मामलेदारों में उसकी कोई गवाही काम न देगी।

पहलवान लचे। जी से घबराये। कहा, "मामला तो हमको कुछ मालूम नही। राय हम इस पर क्या दें ?

राय नही। रुपये चाहिएँ। पुलिस के हाथ अब जाने ही वाला हैं। तब दूने से ज्यादा पर कही छूटियेगा।

देखिये, बिना कुसूर के अगर सजा भी हो जायगी तो काट लेंगे। और क्या कहें ?

तो पहलवान, सजा ही होगी। जिन्दगी भर के लिए दागी बन जाइयेगा। फिर जमीदार ही का सहारा ढूँढना होगा और गांव में।

इतने दबकर तो कभी नही रहे। अब मालूम भी नही कि माजरा क्या है, तब क्या हाँ करे और क्या नही ? आप माजरा बतला दीजिये। हम आप को सही जवाब देंगे।

भाई, बात हमा ी हो तो कहें। दुनिया-भर जुत गई, अभी मौसम का रग ही नही मालूम। कही भी जाइयेगा, राज ही मिलेगा अपने घर में तो पक्की बात ले लीजिये।

तो हमारे घर हर्रसिंगार के फूलो की तरह रुपये नही बिछ जाते। हम बिछा कहां से दें ? अगर पुलिस के पेच में आ गये और अपने को बेकसूर पाया तो आगे दुश्मन से बदला निकाल लेंगे। ठाकुर हो कर और कौन सी सचाई वाली बात कहें ?

तो, कहो तो हम चलें। देर हो रही है।

पहलवान बहुत विकल हुए। जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाने लगे मगर जोड नहीं बैठा, जैसे जगल में भटकते फिर रहे

हों। पहलवान के आँसू बडी करुणा से निकलते है । रामसिह के दोनों गालों से बड़े-बड़े आँसू टपकते रहे। उन्होने कहा, कही इतनी भी लकडी तो पकडाई होती ! रपोट करने वाला व्यक्ति कौन है ? हमने कौन-सी खता को ?

पहलवान, यह अपने-आप से पूछिये । मगर हमारी मार्फ़त यह रुपये आप दे देंगे तो मामला ले-दे कर दवा दिया जायगा, नहीं तो आप फँसेंगे और गाँव में आपका मददगार न खडा होगा। हमको यह दु:ख है कि आपकी भलमनसी में वट्टा लगते देख कर भी हम किनारा किये रहेंगे क्योकि पानी में रह कर मगर से वैर हम न करेंगे। इसीलिये कहते हैं कि जब फाँसी गले लग चुकी है, वुरा फ़ेल तैयार हो गया है, मामला सही हो या ग़लत, तो पुलिस के हाथ जाने के पहले उसकी पायेदारी मार दी जानी चाहिये, नही तो इस फाँसी से छुटकारा न होगा। आप को किन्होने फँसाया, किन्होने नही, यह पुलिस से आप मालूम कर लीजियेगा, क्योकि वहाँ वादी पहले रपोट करने के लिये जायगा।

रामसिह ढाढें मारकर रोने लगे। यमुनाप्रसाद के पैर पकड लिये। कहा, मालिक, हमसे खता हुई, हमने आपके सामने सर उठाया। हमारी इज्जत वचाइये। यह ताव हममें नही कि सैकडों का झोका सह जायें। हम मिठाई खाने के लिये दो-चार रुपये की चपेट सह लेंगे।

मिश्रजी ने हाँथ-मुँह धोये श्रौर मिली पांच भेलियो में बडी-बडी दो भेलियाँ गुड की निकाली। एक अपने लिए रक्खी, एक मातादीन को दी। मातादीन हराम का माल लापरवाही से गले के नीचे उतारने लगा। मिश्रजी भी नि सकोच हो कर गुड की भेली खाने लगे। दोनो ने खा कर पानी पिया, फिर थाने के लिये रवाना हुए।

थाने की लाल दीवार दिखने लगी। सडक के किनारे के पेडो की ग्राड थी, मगर पेडियो की दरार से निगाह पहुँच जाती है। मातादीन का वीरत्व थाने के दिखने के साथ-साथ बढ गया। मिश्रजी अभ्यासी मनुष्य की चाल से चलते गये।

थाना आया। दोनो अहाते के अन्दर गये। चौकीदार ने मुशी को सलाम किया।

मुशी ने पूछा, किस मौजे के हो ?

चौकीदार ने कहा, हुजूर, सरायन का।

मुशी ने पूछा, और यह कौन है ?

चौकीदार ने जवाब दिया, वही के ब्राह्मण रपोट कराने आए है।

मुशी जमे। कँची निगाह से एक दफे मिश्रजी को देख लिया, फिर कहा, इधर आग्रो। मिश्रजी बढे और झुक कर सलाम किया।

मुशी ने कहा, लाग्रो, यह पहली सरकार का है।

मिश्रजी ने कहा, अभी दिया क्या ?

डाँटकर मुशी जी ने माँ की गाली दी ।

मिश्रजी ने कहा, यह एक दूसरी रपोट होगी ।

मुशी पहले घवराए फिर उठकर चले गये । सोचा था, बैठा रहेगा, झक मारेगा, रपोट लिखायेगा ।

उठ कर अपने डेरे की तरफ़ चले तो चौकीदार ने वढ़कर एकान्त में कहा, आप पुलिस का राज विगाडते हैं, हम उसी गाँव में रहते हैं या और कही ? मुशी झेंप सँभाल कर सर गडाए हुए चले ही गये ।

चौकीदार थानेदार के पास गया । थानेदार ने मिश्रजी को वुलाया और पूछ-ताछ की । मिश्रजी ने कहा, अव पहला मामला तो यही है कि थाने आने पर गलियाँ मिलती हैं या यह मुशीजी किसी फेर में हैं ?

थानेदार ने कहा, खैर कल हम आपके गाँव आयेंगे और तहक़ीकात कर जायेंगे जव चौकीदार को आप लाये तो रपोट हो चुकी ।

चौकीदार का नाम लेकर पूछा, क्या रपोट वाले रुपये ले लिये ?

मिश्रजी ने कहा, गाँव में आप लीजियेगा ।

थानेदार के चेहरे पर शिकनें पड़ीं, मगर चुपचाप वैठे रहे ।

मिश्रजी थाने से वाहर निकल आए और गाँव का रास्ता पकडा ।

★

१२

गांव लौटते मिश्रजी का चौकीदार से साथ छुट गया। थाने में चौकीदार ने तरह-तरह की सच-झूठ बातो का थानेदार मे राज खोला, जिसमें गांव के बाशिन्दो की शिकायत ज्यादा थी। सरकारी पक्ष को प्रबल किए हुए था। मुसलमान के प्रति, उसके बडप्पन के हक के कारण ईर्ष्या भी थी, साथ ही वह यह भी समझता था, सरकार मुसलमान के खिलाफ़ बातचीत कराना चाहती है और जब कि एक मामला आंख का देखा गठ चुका है, तब इसको छोडना बेवकूफ का काम होगा। ईश्वर की कृपा से थानेदार भी मुसलमान थे, छोटे थानेदार हिन्दू थे, ठाकुर। इन्सपेक्टर हिन्दू थे। मातादीन इन्ही कडियो से चढता था। जी खोलकर उसने मुशी हकीकत अली खां की शिकायत की। मारे गरमी के वह रपोट न लिख कर गालियां देते हुए कुर्सी छोड कर चल दिए, कहा। यह भी कहा कि

इस पजे से छुटकारा, क्योंकि यह पजा ही ऐसा है जो कभी किसी को छोडता नही। जाइये, हम जगल जा रहे हैं, इस तरह दूसरो को भी हम को खुश करना पडता है, उन का रुख देखना पडता है और उन की बात भी माननी पडती है।

पहलवान को दिल में वल मिला। मिश्रजी भीटो के आगे वाली तलइया के किनारे मुँह-अँधेरे निपटने के लिये गये।

रात को भोजन-भाव करके मिश्रजी रिश्तेदार जमींदार के यहाँ भी हो आए। कोई बातचीत न की, कोई राज न दिया, सिवा इसके कि कल थानेदार आयेंगे। रामराखन को इतने से पूरा हाल जैसे मिल गया। गम्भीर मुद्रा से विचार करने लगे। मिश्रजी से कहा, हम बहुत थके हैं, अब हम को आराम करना है।

जमींदार ने हाथ जोड कर प्रणाम किया, मिश्रजी ने आशीर्वाद देकर रास्ता नापा। घर पहुँच कर दो रपोर्टें लिखीं, एक इस्पेक्टर के नाम, दूसरी कप्तान पुलिस के नाम। कागज, कलम-दावात घर में तैयार थे, रपोर्टें पूरी करके सिरनामे लिख कर रात ही को पास के लेटर-बाक्स में छोड आये। ब्राह्मण का ताव, सोचा कहीं सवेरे तक ठडा न हो जाय, जहाँ सत्यनाश वहाँ साढे सत्यनाश। मिश्रजी मुशी का नाम जानते थे। उनका काम ही इस हल्के का परिचय रखना था।

★

पहलवान के आँसू आ गये। कहा—भैया, एक जगह रहने का यह हाल है! कुछ हमको भी नही मालूम, नहीं जानते, कौन-सी लकडी फेरी जानेवाली है। जितने लोग आते है सब बात लेनेवाले, इज्जत लेनेवाले।

मिश्रजी ने कहा, जाल-ही-जाल में हम-तुम जितनी मछलियाँ है फँसाई और निकाली जाती है। जितना वैर बढना रहेगा, जमीदार और सरकार को उतना ही फायदा है। बात की जड बेबात-की-बात में पडती है। इसके बाद बातो का ही जाल फैलता है। क्या आपसे किसी से लाग-डाँट थी?

पहलवान पशोपेश में पडे। देखा, यहाँ भी राज देना है। कहा, उस गाँव का एक लडका लडने आता था, या तो वह दुश्मनी की गरज से भेजा गया, या उसके आने पर उसके लोगो को बुरा लगा, और हमारी समझ में कुछ नही आता।

मिश्रजी ने कहा, आप हमको मानते है, सारा गाव हम को मानता है। मान्य का काम यह नही होता कि वह अपने बन्धुओ को फँसाये। हम आपसे इतना कहे देते है कि हमारे जितने बयान होगे उनमें आप अपने को न समझें और यहाँ आप हमारे साथ आए, यह किसी दूसरे से न कहें, दूसरो को ही कहने दें। हम आपके दुश्मन नही, यही से जाहिर है। गाँव के दो-एक हम को आप को देख भी चुके होगे। उन्ही को कहने दीजिए। अगर हम को कहियेगा कि बुला ले गये थे तो इससे आप का न भला होगा और न

इस पजे से छुटकारा, क्योंकि यह पजा ही ऐसा है जो कभी किसी को छोडता नही। जाइये, हम जगल जा रहे हैं, इस तरह दूसरो को भी हम को खुश करना पडता है, उन का रुख देखना पडता है और उन की बात भी माननी पडती है।

पहलवान को दिल में बल मिला। मिश्रजी भीटो के आगे वाली तलइया के किनारे मुँह-अँधेरे निपटने के लिये गये।

रात को भोजन-भाव करके मिश्रजी रिश्तेदार जमीदार के यहाँ भी हो आए। कोई बातचीत न की, कोई राज न दिया, सिवा इसके कि कल थानेदार आयेंगे। रामराखन को इतने से पूरा हाल जैसे मिल गया। गम्भीर मुद्रा से विचार करने लगे। मिश्रजी से कहा, हम बहुत थके हैं, अब हम को आराम करना है।

जमीदार ने हाथ जोड कर प्रणाम किया, मिश्रजी ने आशीर्वाद देकर रास्ता नापा। घर पहुँच कर दो रपोर्टें लिखी, एक इस्पेक्टर के नाम, दूसरी कप्तान पुलिस के नाम। कागज, कलम-दावात घर में तैयार थे, रपोर्टें पूरी करके सिरनामे लिख कर रात ही को पास के लेटर-बाक्स में छोड आये। ब्राह्मण का ताव, सोचा कही सवेरे तक ठडा न हो जाय, जहाँ सत्यनाश वहाँ साढे सत्यनाश। मिश्रजी मुशी का नाम जानते थे। उनका काम ही इस हल्के का परिचय रखना था।

★

१३

दूसरे दिन आठ बजे दो सिपाहियो के साथ थानेदार आये। धर्मशाले में उतरे। गांव के जमीदारो को बुलाया। चारो ओर हलचल मच गई। सब को निश्चय था कि रपोट हो चुकी है। मातादीन थानेदार से सहमत हो कर भी न हुआ। गांव भर में उसने भी अपनी दो-रगी उडाई थी। मजदूरो से अच्छे-अच्छे पलग दो-तीन उठवा कर जमीदार रामराखन ने भिजवा दिये, साथ कालीन। घर में पूडी और साग का नाश्ता बनाने के लिए कह गए। थानेदार को यह पसन्द नही, मगर हिन्दुओ के गाव में मुसलमान पकाने वाले के न होने पर यह खाना स्वीकार कर लेते है, साथ में कह भी देते है, हमारा खाना तो आप लोगा का मालूम है, बौर उसके मजा नही आता, न पेट भरता है।

तीन-चार पीपल, पाकर और महुए के पेड धमशाला के आसपास है। कुछ ही दूर एक पक्का तालाब, पक्का कुआं स्वच्छ जलवाला

धर्मशाला के साथ लगा हुआ है। बग़ल में लडको ने एक अखाडा गोड रखा है कूदने के लिये। पीपल के नीचे चबूतरा है जिस पर पीपल की जड के साथ शिवजी रखे हुए हैं। गाँव का यह एक सबसे अधिक मनोहर स्थान है। यहाँ से तीन-चार लीकें दूसरे-दूसरे गाँवो को कट कर गई हैं। अगल-बग़ल खेत और बागात है। दिन का दृश्य बडा ही सुहावना हो रहा है। खरीफ़ की हरियाली मन को मोहे ले रही है। पुरवाई के झोके मतवाले किये जा रहे हैं। कुछ ही फासले से गाँव शुरू है। पेडो पर बुलबुल, तोते, रुकमिनें, गलारें, कबूतर आदि चहकते और गटरगूँ करते हैं। आम की कुञ्जो से पपीहे और कोयल की होड सुनाई पड रही है।

थानेदार ने यहाँ डेरा इसलिये जमाया कि अपना दल यहाँ तैयार कर लें, तब मामले में हाथ लगायें। चौकीदार से जो कुछ उन को मालूम हुआ था वह बहुत पायेदार बात न थी, दूसरे मुशी के जरा चले जाने पर रपोट लिखानेवाले मिश्र का थाना छोड कर चला जाना शक पैदा कर रहा था। फिर भी पुलिस पर कोई आक्षेप न हो इसलिये उन्होंने तहकीकात करनी चाही मगर छिपे तौर से। चौकीदार के कहने के अनुसार सिपाहियो ने मुख्य-मुख्य आदमियो को बुलाया। सब लोग कौवे की तरह एक-दूसरे को देखते हुए आगे-पीछे चले।

चौकीदार एकान्त समझ कर मिश्रजी के पास गया और दोनो हाथ से बिल दिखा कर थाने की मनोभावना समझाई और हिम्मत बँधाते हुए कहा, ढीले न पडना। कह कर चला गया।

मिश्रजी एकान्त देख कर पहलवान के यहाँ गये और बाहर से आवाज दी।

बुलाये जाने पर सिपाही की पगडी देख कर पहलवान को जूडी चढ आई थी। जब मिश्रजी ने आवाज़ दी, उन्होंने डरभूते स्वर से रज़ाई के भीतर से कहा, अरे, जूडी चढी है, क्या काम है? घर में कोई नही है।

मिश्रजी ने कहा, ओढे-ओढे चले चलो। नही तो मामला समझ में न आयेगा, दोस्त और दुश्मन की पहचान जाती रहेगी। हम आगे-आगे चलते है। हमारे तरफदार रहना।

पहलवान ने आवाज़ दी, जब तुम कहते हो तब चलेंगे। रजाई की जगह चदरा ओढ लेंगे। कह कर जोर बाँधा कि मददगार है।

रामरावन अपने पूरे सहायकों के साथ मामले को साध कर आगे पीछे चले, रामरावन, लीलाराम, रामशकर, यमुनाप्रसाद, देवीप्रसाद, शिवकुमार तथा गाव के और-और जमीदार और महाजन। एक-एक करके पलग पर बैठे हुए थानेदार के पास पहुँचे और कमर भर झुक कर सलाम करते गये, फिर दूसरी चारपाइया पर अदब के साथ बैठते रहे। गोडइत लोगों को तम्बाकू खिलाता और हुक्का पिलाता रहा। थानेदार के कहने के माफिक, अभी यह सरकारी काम नही, गाँव के लोगों से थानेदार की आपसी बातचीत है।

इसी बीच मिश्रजी आये और साधारण रूप से थानेदार को सलाम किया।

यहाँ मिश्रजी का बड़प्पन रामराखन की नजर में आनेवाला नहीं और जब कि वह मुद्दई है। उन्होंने मिश्रजी को बुला कर नही बैठाला, यह बात मिश्रजी को खटकी। मगर कुछ बोले नही। संसारवाली नस दबाये हुए, होश दुरुस्त किये हुए, धर्मशाला के चबूतरे पर सब की तरफ़ मुँह करके बैठे। उनके बड़प्पन की तरह यह चबूतरा भी चारपाइयों से ऊँचा था। तेल लगाने के सहज स्वभाव से रामराखन ने हाथ उठा कर कहा, सरकार के सामने इस आसन से ऊँची जगह ऐसी हालत में मिश्रजी आप को न बैठना चाहिये।

मिश्रजी ने कहा, अगर आप इस चारपाई को उठा कर धर्मशाले में डाल दें, और थानेदार साहब बैठें तो और शोभित हो जाय। थानेदार को मुसलमान समझ कर मिश्रजी ने जमीदार पर धार्मिकता का एक हाथ रखा।

जमीदार खामोश रह गये। उन्होंने सोचा मुसलमान को हिन्दू धर्मशाला में घुसेड़ कर लोगों की निगाह में हम को गिराना चाहता है। कुछ नजर बदली, मगर अन्दर से डरे कि मामला उन्ही का गठाया हुआ है कही यह उल्टा खुदाई न गले डाल दे। दब कर ढाढ़स बँधाते हुए कहा, बैठे रहिए, जैसे चारपाई वैसे चबूतरा।

थानेदार बातचीत तोलते रहे। इसी समय चदरा ओढ़े कोट पहने काँखते हुए पहलवान धीरे-धीरे आये, और जहाँ मिश्रजी

बैठे थे उसी जगह, एक किनारे से थानेदार को दूर का सलाम करके, बैठे। उनको निश्चय था, यह गठना उन्ही पर है।

एक चारपाई पर सिपाही बैठे थे। गांव के तीन चौकीदार लाठी लिए हुए अगल-बगल खडे थे। इक्के-दुक्के लोग जो राही थे या जिन का मामले मे तअल्लुक न था आते-जाते रहे।

थोडी देर में जमीदारो वाली चारपाई के एक-एक पाये के पास पान-दोहरा खायो की तम्बाकू की पीक से वित्ते-वित्ते भर जमीन रग गई। गांव में भीट, गांव के तमोली, कई रोज की तैयारी, सैकडो की सख्या में लगे पान लौंगदार ले आए। इलायची दोहरा और जरदावाली तश्तरियां भी दो-तीन। सिपाहियो ने पत्ते चबाने वाले बकरो को मात किया। झूठ के मामले में जमीदारो की चौगुनी फुरती थी।

१४

थानेदार देखते हुए जातीय सभ्यता के अनुसार ऊब कर, लोभ के ढग से चले, सरकारी आज्ञा की हथेली से सिपाहियों को बुला कर, एक किनारे आपसी बातचीत करने के लिये। यहाँ ऐसे मामलो की तहकीकात में जमींदारो और मुद्दई-मुद्दालो से सिपाही बातचीत करते हैं, लेन-देन करते हैं। कुछ दूर चल कर कान में बतला कर, थानेदार लौट आए और बैठे। एक सिपाही ने यमुना-प्रसाद को और दूसरे ने रामराखन को बुलाया। अलग-अलग दोनो की बातचीत ले कर अलग-अलग थानेदार से कहेंगे। उनके सिवा दूसरे को एक-दूसरे की बातचीत मालूम न होगी। सिपाहियो ने तदनुसार दोनो को बुलाया, दो भिन्न दिशाओ में ले चले और पूछने लगे।

उत्तर तरफ यमुनाप्रसाद वाला सिपाही और दक्षिण तरफ रामराखन वाला था।

यमुनाप्रसाद वाले ने एक दफे मूछो पर ताव दे कर यमुनाप्रसाद से पूछा, आपको क्या मालूम है ?

यमुनाप्रसाद ने कहा, हमारी सीढी दूसरे के घर मे काम के लिये आई हुई दीवार से लगी थी। रात को वह माधो मिश्र की दीवार से लगी दिखी। माधो मिश्र उस रात विना सेंध के अपने यहाँ से कुछ रुपये सामान और बरतन उठ जाने का बयान करते थे। आखिर चोरी या डाके के वक्त उन की आँख खुल गयी थी, मगर मारे डर के उन्होने मुँह नही खोला और हिले भी नही, पड़े-पडे देखते रहे। जो सूरत कम-बेश उनकी पहचान में आई उसका बयान यह है कि जवान खासा हट्टा-कट्टा था।

रामराखन वाले ने पूछा, आपको इस मामले का क्या हाल मालूम है ?

रामराखन ने कहा, मिश्र माधवप्रसादजी गाँव के भलेमानुसो के अगुआ अपने जमीदार यमुनाप्रसाद के साथ हमारे यहाँ तडके आए और हाल बयान किया कि रात को ताला तोड कर उनके घर चोरी हुई है। पिछली रात को पैर की आहट से या सामान की खनक से उनकी आँख खुल गयी, वह मारे डर के चारपाई स उठे नही पडे-पडे ताकते रहे। जो सूरत उन्हो ने बयान की वह यह ह कि एक गठा जवान अँधेरे में लगी सीढ़ी से चढता नजर आया। चढ़ कर उसने सीढी चढा ली। सुन कर हमने थाने में रपोट कर आने के लिए कहा और शक में किसी का या किन्ही के नाम

लेना चाहें तो लिखा दे, यह सलाह दी। अब सरकार की तहकीकात है।

दोनों सिपाही अलग-अलग खड़े रहे। थानेदार ने दोनों से अलग अलग मिल कर बातें की और कारंवाई समझाई। सिपाहियों ने फिर दोनो जमींदारों को बुलाया और रामराखन से उसी तरह यमुनाप्रसाद के पीछे लग कर जाने और क्या बातचीत होती है कहने के लिए कहा। यही आज्ञा यमुनाप्रसाद को हुई। दोनों ने पहलवान को बुलाया।

पहलवान रामसिंह ने काँपते गले से कुछ कहा, आए और मजबूरन काँपते हुए पैर रखते हुए एक बगल खड़े दोनों जमींदारों से मिलने गये।

यमुनाप्रसाद ने पहले की तरह पहलवान से कहा, हम कहते थे कि सर आएगा। वही हो कर रहा। इल्लत लग जाती है, वो ऐसे नहीं छूटती, कुछ खर्च दीजिए या अपनी जान पर खेलिये। अब सामने आया।

जमींदार रामराखन की ओर उँगली उठा कर पहलवान से उन्होंने कहा, हमारी आप की बातचीत के यह गवाह है। डकार जाइयेगा तो भुगतना होगा।

पहलवान के होश फाख्ता हो गये। झूठी जूड़ी चौगुनी बढ़ी। थानेदार निर्विकार चित्त से देखते रहे। सिपाही अपनी-अपनी जगह तम्बाकू और पान थूकते रहे।

पहलवान ने कई दफे अपने निश्छल हृदय का परिचय देना चाहा मगर हुमस-हुमस कर रह गये। सरकारी मजबूरी छाती पर तिपाये की तरह बराबर जमी पर जैसे जम कर बैठी थी, धार्मिक प्रतिक्रिया छाती के निचले हिस्से में। हाथ मला किये, कांपा किये, हुमस-हुमस कर रहा किये, आंसू लाने की कोशिश करती आंखो को देखा किये।

कुछ कहो नही, तो जाते हैं—यमुनाप्रसाद ने आवाज ऊँची करके कहा।

पहलवान डगमगा कर रह गये।

रामराखन ने हिम्मत बँधाई। यमुनाप्रसाद से कहा, आओ उधर के लोगो से बातचीत कर लें।

अपने साथ रामराखन कई और मझोले नये आदमियो को ले आये थे अपने दबाव से। थानेदार की तरफदारी के बिना उनसे रुपये वसूल न होगे, इस ख्याल से उनके पास चले। साथ यमुना गवाह की तरह गये। रामराखन की तरफ से यह सबूत है कि वह अपनी तरफ से मित्र ग्रामवासियो से रुपये नही वसूल कर रहे है, ग्रामवासियो की बचत के लिये ही ये रुपये लिए जा रहे हैं, नही तो थानेदार खुश नही होते, उनसे बैर होता है, जिसका झाका पहले जमींदार के घर आता है। इनमें रामसुख, शिवलाल दो मुख्य है। अलग-अलग हर एक से जमींदार ने यह कहा कि चोरी की शनाख्त में वे पुलिस की निगाह में आते है, उन का

क्या कहना है। गिडगिडा कर, समझाये जाने पर, हर एक ने अपनी इज्जत के बचाव के लिये दस-दस रुपये देना मजूर किया। रामराखन के लिए यह तारीफ़ वाली बात हुई कि उनके आदमियो से थानेदार को बीस रुपये की आमदनी हुई, जिसमें दो रुपये कम से कम उनके हैं।

दोनो ने चल कर अपनी-अपनी बातें कहीं। सिपाहियो मे थानेदार ने सुना, शनाख्त वाले असली आदमी के अलावा गैर आदमियो से बीस रुपये रामराखन की मार्फत मिले।

यमुनाप्रसाद ढीले हुए भी, सरकार की फर्माबरदारो के बल से कडे रहे।

मिश्रजी का अभी समय न आया था। थानेदार ने समझाने के लिए कहा, पहलवान की निगरानी खुलवाई जायगी इसलिए बदमाशी लगाई जानेवाली है, पुलिस मुद्दई होने पर मदद न पहुँचेगी, सजा हो जायगी।

यमुनाप्रसाद सिपाही से सुन कर पहलवान के पास फिर गये।

एक दफा ठण्डे होने, सोचने-समझने का मौका पा कर पहलवान ने दूसरे दफे भी आवाज लगाई।

मिश्रजी से पूछने का हुक्म हुआ। मिश्रजी ने रपोट के रुपये दे दिए थे। दिल कडा था। बहुत नीचा न देखने की हिम्मत बाँधे हुए थे, व्यक्ति के विचार मे मुशी के खिलाफ़ भी हो चुके थे। चौकीदार पर भरोसा था कि गाँव का विचार रखेगा। इज्जत के

ख्याल से बयान बदल दिये । कहा एक लम्बा-लम्बा दुबला-पतला आदमी था, भीतर सीढी लगा कर उतरा । मुडेरी पर एक आदमी खडा था उसको समान उठा कर देता रहा होगा, जब हमारी आंख खुली और हम हिले, चढकर मुडेरी पर हो रहा और सीढी चढा कर बाहरी तरफ लगा ली, फिर एक रहे, दो या और उतर गये। हम अलसाये हुए, कुछ न समझे हुए, आहट से उठे और दिया जलाने को हुए, तब तक यह सब हो गया । दिया जला कर हमने देखा तो कोठरी का ताला टूटा था और चार पेटियां और कुछ बासन गायब थे । दरवाजा खोल कर आवाज लगाई और बाहर देखा तो सीढी लगी थी । रात साढे तीन का वक्त रहा होगा ।

थानेदार ने उसी तरह सुना । निगरानी-शुदह पासी के साथ पहलवान के आने की गवाहिया उसी तरह ली गई और पहलवान से फिर उसी तरह पूछने के लिये कहा गया ।

यमुनाप्रसाद को इतना ही बल था कि गवाहियो की व्यवस्था कर रखी थी ।

पहलवान के पास फिर गये और पूछा और खुल कर कहा भा कि अगर पुलिस को खुश नही करते तो बंधत है यानी बदमाशी लगाई जाती है, सजा की भी नौबत आ सकती है । कही माल बरामद हुआ, जब कि पुलिस जहा चाहेगी तलाशी लेगी, तो ईश्वर के बचाये भी नही बचते । पहलवान ने एक दफे मिश्रजी की तरफ देखा । मिश्रजी को भी मददगार चाहिये था, एक पासी दिखा

चुके थे, यहाँ अपने बयान में पहलवान की पीठ भी बचाई थी, गर्दन कडी करके उन की तरफ़ देख कर इशारा किया।

पहलवान ने जूडी में जैसे काँप कर कहा, भई जब पीछे पड गये तब दस रुपये तक कहो तो बाज आयें, नहीं तो सेंत-मेंत की बला है, आप गाँव के जमींदार हैं, जानते हैं कि बेकसूर की मदद होनी चाहिये, बिना कारण गला फँस रहा है।

यमुनाप्रसाद ने कहा, दस रुपये से काम न चलेगा। जब मामला लड गया है बचाव कठिन है। देर करना ठीक नहीं है। क़ाफी सोच-विचार चुके। कबूलो या अखीर है कह दें।

पहलवान ने कहा, दस और दे सकते हैं, बस।

यमुनाप्रसाद का चार सौ का अन्दाजा बीस में आया। चढ़ी पैंग घट गई।

सिपाही ने चल कर कहा कि बीस रुपया देना चाहता है।

सिपाही ने थानेदार से जा कर कहा।

थानेदार ने कहा बेलज्जत है।

सिपाही ने कहा, माल बरामद नहीं कुछ रोज तक तहक़ीकात कर लीजिए, फिर बाँधिए, फिर जैसी हुजूर की मर्जी।

थानेदार ने कहा, हाँ बदमाश की तरफ़ के भी गवाह होने चाहियें।

नाश्ते का हिसाब था। उस रोज थानेदार चले गये।

★

१५

मनोहर बम्बई न जा कर काशी आया। गाडी मे उतरकर स्टेशन पर एक पुस्तिका खरीदी जो काशी पर थी। टिकट दे कर स्टेशन से बाहर निकला और पुल के नीचे राजघाट पर चल कर बैठा। गगा और किनारे की उजडी हुई पुरानी बस्ती देखता रहा। इक्के दुक्के लोग आते-जाते रहे। पूछने पर उस को मालूम हुआ, पुरानी काशी वरुणा की तरफ और थी। किसी-किसी ने कहा, वरुणा के किनारे तक थी और वरुणा के किनारे-किनारे इस तरफ बीच में गगा के किनारे कुछ आगे किला पडता है। अस्सी की तरफ जहाँ आबादी है, वन था। मुगल-कालीन काशी अस्सी नाले तक थी। तुलसीदास जी का स्थान उसी जगह है। राजघाट के नीचे का हिस्सा हिन्दू-कालीन पुराना है। बहुत-सी चीजें खोदने पर मिलती है। मनोहर डेढ घटे तक बैठा रहा। काशी वाली किताब

पढ डाली। लोगो से भी जानकारी प्राप्त की। सभो के पते लगाए। मस्कृत की पढाई के बारे में भी पूछा कि क्या-क्या प्रवध है। फिर स्नान करके धोती सुखाई। फिर जलपान किया और शहर की तरफ़ चला।

दो-तीन रोज़ तक घूमता-पूछता सुविधायें देखता रहा। धनिकजनो और राजो-महाराजो के दिये दान और विद्या के प्रवन्ध की जांच करता रहा। स्वभाव में जो जलन थी उसकी लपटो में जलाने का अन्वेषण प्रबल था। सस्कृत वह इतनी जानता था कि काशी में सम्मान की सर्वत्र उसको सुविधा हो। मगर जिस परिस्थिति का वह मुक़ाबिला कर रहा था उसका मित्र उसको कही नही मिला। द्विजो के शूद्रत्व से उस का रोम्रां-रोम्रां लपट की जीभ हो रहा था। उन को जलाने या जाति में नई जान फूंकने की सहूलियत उस को उन सभो और पाठशालाओ से नही हुई। इतर-जनो में भी प्राचीन भावना थी। अगर कही अंग्रेजी राज के कारण छ्रुमसते थे, तो उनका हाथ पकड कर रास्ते पर ले चलनेवाला न था। जाति का कोई व्यक्ति सस्कार करनेवाला चाहिये वह समझा। स्कूली विद्या और सरकारी नौकरी से अपने पाये नही पुख्ता होते। वही रास्ता चालू रहता है जो गुलामी वाला है। उसने छिप कर काम करने की ठानी। उसको विश्वास था कि सस्कार के साथ शास्त्री तक वह बीस आदमियो को ले चल सकता है, जो ब्राह्मणेतर कहे जाते हैं। अपनी जातीय मर्यादा

शास्त्रानुकूल द्विजत्ववाली वे आप ले लेंगे, उसको विश्वास था। वहीं वह जम गया और भूमि की खोज करने लगा। उसके पास बम्बई तक के लिए जितना खर्च था, उससे वह एक मास तक सादगी से काशी में रह सकता था। घर की चिन्ता अविवाहित युवक को न थी। घर का मुँह वह मर्यादित हो कर ही देखेगा।

उसने देखा काशी सभी प्रकार के मनुष्यो की आबादी है। मन्दिरो, मठो और राजभवनो के अलावा उसके चार-पाँच मुख्य विभाग किये जा सकते हैं। उसी भू-भाग के रहने वाले लोग मुख्य हैं। ईसाइयो के अलावा मुसलमान, बगाली, गुजराती, मराठे अपने-अपने निवास बनाये हुए हैं। काम स्थानीय जनो में ही सम्भव है। उसका विरोध द्विजो द्वारा अवश्य होगा। मगर स्थानीय जिन वैश्यो तक सस्कृत की प्रथा थी उनके दायरे से कुछ उतर कर उसने हिसाब बाँधा। जो जातियाँ प्रजा के रूप में शूद्र कही जाती थी उनको उसने वैश्य के रूप में समझा, दिल से ब्राह्मण से भी उच्च। जिस प्रचलन के घाव उसको लगे थे, उससे बचाव का यही रूप उसने निकाला। एक जगह जम कर घूम-घूम कर हाल मालूम करता रहा। धनिक शूद्र काशी में बहुत थे।

एक हफ्ते के अन्दर उसने उनमें नई जान डाल दी। सस्कृत की पढ़ाई से उनका सामाजिक क्रम ऊँचा उठेगा, उनकी समझ में आया। जो लडके स्कूल नही जाते थे उनको उसने अपनी पाठशाला में लिया। जो स्कूल और कालेज में सस्कृत लिये हुए थे उनको वेतन

ले कर पढाने का प्रबन्ध किया। फायदा वह सुझाया कि एक पठित ब्राह्मण उनके सामाजिक क्रम को उठाने का सहायक है, उनके घर की पकी साग-पूडी खुल्लम-खुल्ला खायेगा, इस सुविधा को वह गाँठ बाँधे रहेंगे और आवश्यकता पडने पर प्रमाण के रूप में पेश करेंगे, मगर जब तक खासी तैयारी न हो जाय तब तक यह भेद न खोलें, क्योंकि वह अकेला बहुसख्यक ब्राह्मणो से अकारण विरोध न करेगा। लोग उसकी बात से बहुत प्रसन्न हुए। वह तुल गया था, उनके इम्तहान में कटा नही। काम शुरू हो गया।

१६

मनोहर उषाकाल उठ कर निवृत्त हो कर दशाश्वमेघ में गगा स्नान करके विश्वनाथ जी के दर्शन करता था, फिर लौट कर लडको को पढाता था। दुपहर को भोजन-पान के पश्चात दो घटे विश्राम करता था, फिर आखीर आचार्य-परीक्षा की पढाई में लगता था। रात को स्कूल-कालेज के लडको को उन के घर चल कर पढा आता था। दुपहर का बनाया भोजन रखा रहता था, दस ग्यारह वजे रात को फुरसत पा कर करता और सो जाता था। इस प्रकार कई महीने पार कर दिये। लोग उसकी तल्लीनता और परिश्रम से प्रसन्न थे। प्राय उस की पूडियो की दावत करते थे। इस प्रकार जीवन का पौधा लहलहाने लगा। लोगो में काना-फूसी शुरू हो गयी, मगर अभी तक चढाई न हुई थी। ब्राह्मण सुन कर वमममा कर रह जाते थे। उनके समथक क्षत्रिय

और वैश्य सुन लेते थे, पराधीनता की दोहाई दे कर रह जाते थे। इस प्रकार छ महीने और पूरे हुए। मनोहर आचार्य-परीक्षा के इम्तहान में बैठा और प्रथम हो कर पास हुआ। इसने उसके सह-कारियों में आनन्द का दूसरा तूफान उठा। वे उसके पीछे जानो-माल खपाने को तैयार हो गये। उसकी तारीफ अब बनारस के इतर-जनो के घर-घर थी। ब्राह्मण के नाम से वही माना जाने लगा। वहाँ के लोग, खासतौर से ब्राह्मण और जगे, परन्तु दान-दक्षिणा के खाते में उसका नाम न होने के कारण, उसकी तारीफ़ सुन कर अवज्ञता से मुँह फेर लेते थे, कहते भी थे—हमारे यहाँ उस की कोई मान्यता नही, न उसकी पाठशाला कोई पाठशाला समझी जाती है।

बनारस में मनोहर इस प्रकार छिप गया कि घरवालो को डेढ साल हो जाने पर भी कोई पता न चला। उसने एक भी पत्र नही लिखा। जी कर भी जैसे मर गया हो। सस्कृत का आचार्य हो कर वह दूसरे विषयो की तरफ मुडा। अग्रेजी भी सीखने लगा। स्वस्थ था, परिश्रम सफल हो चला। उसके छात्र टूटी-फूटी सस्कृत में बातचीत करने लगे। घरवालो का कौतूहल बढ़ चला। इस समय काशी में जोरो से लोग क्रिश्चियन बन रहे थे। इस की पाठ-शाला की इसी डाट के कारण ज्यादा मुखालिफत नही हुई। वह खुद अपना काट सोचे और लिए रहता था, लोगों को नमझाया भी करता था। काशी के धनिक वैश्य जो ब्राह्मणत्व के हकदार

थे, भीतर से शूद्रो के संस्कृत पठन के समर्थक थे। मनोहर अब तक इतनी तैयारी कर चुका था कि इन लोगो को शूद्रत्व के आवरण से पृथक कर देने में प्रमाण-प्रयोगों द्वारा समर्थ हो जाय। लोग उसकी इज्जत करने लगे कि उस को देख कर खड़े हो जाते थे और हाथ जोड़ कर नमस्कार करते थे। कुछ प्रथाएँ भी उन लोगो ने अपने बीच में चला ली थी। उनकी प्राचीन प्रथा द्विजो से मिलते वक्त दूसरी थी। मनोहर को इन सब का ज्ञान हो गया।

काशी में बहुत तरह के लोग रहते है। सभी का उद्देश्य पुण्य-सञ्चय है। पुण्य के प्रकार बहुत से हैं। रानी विमला का नाम उनमें एक वैसा ही है जैसा मनोहर का। रानी साहिबा अब तक भारत की काफी खाक छान चुकी हैं। अभी उम्र सिर्फ पचीस साल की है, मगर विधवा है, पति शराब-खोरी से नष्ट-स्वास्थ्य हो कर गुजर चुके हैं। सरकारी बन्धुत्व का रानी साहिबा पर अत्यधिक आक्रमण हो चुका है। वैधव्य की बाधा स्वल्पकाल के लिये भी नही मानी गई। उन्होने अपने कहार से सुना कि एक पण्डित इस प्रकार का काम कर रहे हैं। इससे उनका मन ऊँचा उठा। प्राचीन प्रथा से उनकी रक्षा नही हुई, इस नवीनता के जागरण में काम करने के लिये गुप्त रूप से उन्होने हाथ बढाया, अर्थात् एक दिन मनोहर से मिलने के लिये कहा। खबर पा कर मनोहर ने मिलने का अपना रास्ता निकाला, कहा—नहाते वक्त दशाश्वमेध घाट पर बात-चीत

हो सकती है, अभी खुल कर मिलने में बहुत तरह की आपत्तियाँ हो सकती हैं, जिनका प्रतिरोध किसी पक्ष के द्वारा नही हो सकता। सम्वाद सुन कर रानी साहिबा सहमत हुईं और रात चार बजे जब इक्के-दुक्के आदमी ही नहाने के लिये जाते हैं, साधारण वेश से स्नानार्थिनी की तरह उससे मिलने के लिये कहा। दिन निश्चित हो गया। कहार रानी साहिबा को ले कर आया। मनोहर रास्ते पर मिला।

रानी साहिबा ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। मनोहर ने भी किया। बत्ती के प्रकाश में रानी साहिबा ने देखा, दिव्य युवक है। कहा, हम आपकी तारीफ़ सुन चुके हैं। यह लीजिये, कह कर रूमाल में बँधी हुई एक रकम मनोहर को दी। हाथ बढा कर मनोहर ने ले लिया। रानी साहिबा ने कहा, अपने काम के लिये, अपनी सहायता के लिए खर्च कीजियेगा। हमारा पता आप को मालूम है। इसी माध्यम से सहायता के लिये कहियेगा। हम अपने हाथ आप को अर्घ देते रहेंगे। देश के युवक, अब हम वह नही हैं, मगर देश की भलाई के लिए तुम्हारे साथ हैं। हमारी जो तौहीन होती है, उसके निराकरण के लिये कम से कम हजार युवक तैयार कर दो।

मनोहर को जैसे साक्षात् अन्नपूर्णा मिली। उसने हाथ जोड नमस्कार किया। कहा, मुझ को आज तक ऐसा दान नही मिला, ऐसी दात्री मैंने आज तक नहीं देखी।

★

थे, भीतर से शूद्रो के सस्कृत पठन के समर्थक थे। मनोहर अब तक इतनी तैयारी कर चुका था कि इन लोगो को शूद्रत्व के आवरण से पृथक कर देने में प्रमाण-प्रयोगो द्वारा समर्थ हो जाय। लोग उसकी इज्जत करने लगे कि उस को देख कर खडे हो जाते थे और हाथ जोड कर नमस्कार करते थे। कुछ प्रथाएँ भी उन लोगो ने अपने बीच में चला ली थी। उनकी प्राचीन प्रथा द्विजो से मिलते वक्त दूसरी थी। मनोहर को इन सब का ज्ञान हो गया।

काशी में बहुत तरह के लोग रहते है। सभी का उद्देश्य पुण्य-सञ्चय है। पुण्य के प्रकार बहुत से है। रानी विमला का नाम उनमें एक वैसा ही है जैसा मनोहर का। रानी साहिबा अब तक भारत की काफी खाक छान चुकी हैं। अभी उम्र सिर्फ पचीस साल की है, मगर विधवा है, पति शराब-खोरी से नष्ट-स्वास्थ्य हो कर गुजर चुके है। सरकारी बन्धुत्व का रानी साहिबा पर अत्यधिक आक्रमण हो चुका है। वैधव्य की बाधा स्वल्पकाल के लिये भी नही मानी गई। उन्होंने अपने कहार से सुना कि एक पण्डित इस प्रकार का काम कर रहे है। इससे उनका मन ऊँचा उठा। प्राचीन प्रथा से उनकी रक्षा नही हुई, इस नवीनता के जागरण में काम करने के लिये गुप्त रूप से उन्होने हाथ बढाया, अर्थात् एक दिन मनोहर से मिलने के लिये कहा। खबर पा कर मनोहर ने मिलने का अपना रास्ता निकाला, कहा—नहाते वक्त दशाश्वमेध घाट पर बात-चीत

मुंशी का बहरहाल तबादला हो गया। बरखास्त होते-होते • गी। यह उन्होंने अपना सौभाग्य समझा। बड़ा बदमाश हलका है कह कर बोरिया-बधना समेट कर विदा हुए। मिश्रजी को खबर हुई कि मुंशी बदल गये। थाने का हाल अदालतवाले लोग बाजार आते-जाते लेते रहते हैं। मिश्रजी ने निश्चय किया कि अब फंदा मजबूत डाला जायगा, बचाव किये रहना चाहिये। जिले में उन्होंने वकील को डायरी लिखा दी कि यह-यह हुआ। गाँव में बातचीत बढ़ी कि अब मिश्रजी के हाथ गाँव के लोगों की बाग-डोर है। सामाजिक फैसले आदि के वह मुखिया माने जाने लगे। आमदनी भी बढ़ी। जमींदारों से कम लगान पर चार बीघे खेत और मिले। वह समझते थे, दिन-दूने रात-चौगुने बढ़ते पाप का पर्दा यह फ़ाश करेगा, तो बाप-दादों की जोड़ी माया महीने भर में बह जायगी। इन खेतों में भी अगर जमींदारोंवाली इज्जत बरकरार रहे, तो भली। थानेदार तब तक माल की जाँच करते रहे। गये हुए सामान की फ़िहरिस्त उनके पास थी। उन्होंने चौकीदार से ले ली थी।

जिस तरह चोरी का न होना एक सरकार का धर्म है, उसी तरह चोरी का होना भी उनका धर्म कहा जा सकता है, जब कि लोगों की माली हालत के सुधार का तरीका ही उलटा है, जमींदारों के बड़प्पन की साख चलती है, विलायत की नोबिलिटी का देश पर सिक्का है। इस तरह, एक थाने में हर रात चोरियाँ होती रहती हैं, कुछ लिखी जाती हैं, कुछ नहीं। इस चोरी के बारे में जो

१७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मिश्रजी मुशी के खिलाफ दरख्वास्त दे चुके थे। गाँव में दल बाधना शुरू किया। पहलवान के खिलाफ उन की गवाही नही थी। यह जमीदारो को बुरा लगा। रिश्तेदारी और मान्यता के के कारण सर उठा कर वे उनके खिलाफ कुछ कह नही सकते थे, लिहाजा आमदनी में जो रिश्वत से होनेवाली थी फर्क आया। चौकीदार भी मिश्रजी के साथ था। कुछ लोग और बँधे। रामसिंह ने अपने लोगो में पैरवी करने की दौड लगाई। मनोहर के गाँव भी गये। थाने में चारो तरफ से सिफारिशें सच हालात के साथ पहुँचने लगी। थानेदार सुनते और खिलते गये। बिना सेंध की चोरी थी, इसलिये बडा महत्त्व उस को नही दिया, उलटे मिश्रजी पर निगाह डटाई। तब तक मुशी के खिलाफ कप्तान के यहाँ से तहकीकात हो गई। मामले को सच समझा हो या झूठ,
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

गाँव की चीज़ें मिश्रजी के यहाँ व्यवहार में अधिक आने लगीं। जमींदारो से इस तरह की शिकायतें थानेदार सुनते रहे, मगर अब तक काँपा न लगा था। चोरियों के सामान में जो चीज़ें बरामद हुई, उन को अभी तक निश्चयपूर्वक थानेदार मिश्रजी की चीज़ें नहीं कह सके थे। इस ताक में थे कि एक अरसे के बाद उन को पहचनवायेंगे।

*

है, थानेदार को बहुत विश्वास न था,
ो वह फँसाना चाहते थे। उन्होंने
।बाव में जो रपोट दी थी वह मुंशी के माफिक थी
।श्रजी के खिलाफ। गांव के जमीदारो को भी उन्होंने
समझाया कि मुशी का तबादला हुआ, इसके माने यह नही कि
वह बरखास्त हो गये या सरकार की नज़र में गिर गये। अगर
रैयत में इतनी गर्मी होगी तो सरकार के मुलाजिम में कितनी हो
सकती है। इनका उलटा सबने समझा कि मिश्रजी एक दिन
बांधे जा सकत हैं। जमीदारो को भीतर एक खुशी हुई, मगर दांव
पर चढा नही पाते थे। जमीन देने का कारण भलमनसी का
बचाव भी रखा था कि उन को अपना तरफदार बनाये रहें कि
कलई न खोल दें।

इस प्रकार एक अरसा गुज़र गया। पहलवान पहले की तरह
बाज़ार आते-जाते रहे, आमदनी बढती रही। उठक-बैठक मिश्र-
जी के यहा बढी और मान्यता भी गांव में उन्ही की रही।
चौकीदार भी आता-जाता रहा और लोग भी आने-जाने लगे।
जिनके दरवाज़े बैठने-बिठाने के लिये चारपाई न पडती थी, उनके
वहां पडने लगी। यदा-कदा जमीदारो का भी शुभागमन होने
लगा। किसी को पता नही चला कि मिश्रजी ने क्या किया कि
मुंशी यहा से वहां हो गये। एक ही हाथ से मिश्रजी ने अपना
मैदान साफ कर लिया। लोगो के यहा से दूध, घी, सब्जी आदि

गांव की चीजें मिश्रजी के यहाँ व्यवहार में अधिक आने लगीं। जमींदारो से इस तरह की शिकायतें थानेदार सुनते रहे, मगर अब तक कांपा न लगा था। चोरियों के सामान में जो चीजें बरामद हुईं, उन को अभी तक निश्चयपूर्वक थानेदार मिश्रजी की चीजें नहीं कह सके थे। इस ताक में थे कि एक अरसे के बाद उन को पहचनवायेंगे।

ooooooooooooooooooooooooooooo

इस प्रकार एक साल से अधिक बीत गया। मिश्रजी तथा लोगों ने निश्चय किया कि शिकायत रफा हो गई। थाने का हिसाब मिश्रजी को मालूम था। वह जानते थे, दूब की जड बारह साल तक सूख कर मिट्टी और पानी के लगते जिस तरह हरी हो उठती है उसी तरह सरकार की निगाह पर चढा आदमी जिन्दगी के आखीर दम तक याद किया जाता है। सरकार और जमीदार का जो साथ है उसके बीच में आ गये हैं। इसका कारण ब्राह्मणत्व का एक दूसरा बडप्पन है। इस को छोड कर भी वह सास नही ले सकते। इतनी मान्यताओ के बाद आदमी का जीना मुहाल हो जाता है। तैयारी किये रहना चाहिये, जो कुछ होगा, भोग लिया जायगा। इस बल पर मिश्रजी बढ़ते गये।

हल्के में थानेदार की निगाह गवनर की निगाह से बडी मान्यता रखती है। थानेदार बदले मगर इस मामले की याद

दिला गये। दूसरे थानेदार हुसन खाँ ने मामले को समझ लिया सरकारी लोगों की गवाहियाँ ले लीं, चार्ज लगाने की पेशवन्दी की। जमींदारो से इच्छानुसार रपोर्टें लेते रहे। चार्जशीट तैयार करते रहे। एक रोज चौकीदार ने मिश्रजी से कहा, माल की पहचान करनी है। जो माल बरामद हुआ है उसमें आप की लिखाई चीजें भी हैं। चलिये थाने में पहचान कर बताइये। मिश्रजी ने कहा—हाँ, चलेंगे। स्नान-भोजन करके दो-तीन मित्रो को ले कर देवी जी की जय करते हुए चले। जानते थे, जाल है। अपना सामान गया ही नहीं, पहचान किस की? घबराये कि अब फँसाये जायेंगे। गवर्नमेंट को मानते ही थे, व्यक्तिगत राग-द्वेष था। थाने चल कर कमर तक झुक कर थानेदार को सलाम किया। थानेदार से चौकीदार ने परिचय दिया। थानेदार कुछ न बोले। मिश्रजी आँखें और मनोभाव पढते रहे। बहुत माफिक नहीं देखा। बरामद शुदा चीजें न थी, दूसरी जगह से लाई गई थी। सामने ला कर रखी गई। तीन का समय था। मिश्रजी एक-एक देखते रहे। चीजें ऐसी न थीं, जो शिनाख्त में न आयें जैसे रुपये-पैसे, सोने-चाँदी की ईंटें या कच्ची चाँदी। जेवर और कपडे वह देखते फिरे। दिल में सोचा अगर नही कहते हैं तो बात नही बनती। गोल-गोल कहते हैं तो बचाव की जगह रहती है, मगर दूसरे गाहक आ सकते हैं या तैयार किये जा सकते है। अगर कहते हैं कि चीजें वही हैं तो

मामला लड जायगा । खुद-ब-खुद थानेदार को जिन्सें जिले की अदालत में भेजनी पडेगी । अभी अगर कोई झोल या कोई पोल है तो वहां खुलेगी, थानेदार के हाथ से यह मामला निकल जायगा । अदालत में हाकिम के यहां होगा । यह भी सोचा कि जो सरकार यहां है वह वहां भी है, हमको थोडी-सी जगह वही मे मिल सकती है ।

मिश्रजी ने कहा, जेवर वगैरह वैसे ही जान पडते हैं । इनकी पहनने वालियां भी हैं । पहचान उन्ही की पक्की होगी, इसलिये मामला जिले में ही फैसला पा सकता है । वहां उन लोगो को हम पहचानने के लिये ले जा सकते हैं ।

थानेदार ने कहा, मगर कोई चीज आप की है, यह कहने ही से आप की नहीं हो जायगी । इसकी भी जांच-पडताल है । सरकार दूध का दूध और पानी का पानी निकाल कर छोडेगी ।

मिश्रजी ने कहा, क्या यह देख नही रहे, सरकार बाघ और बकरी को एक ही घाट पानी पिलाती है।

थानेदार ने कहा, इनमें जो-जो चीजें आप की हों, उठा कर लिखा दीजिये ।

मिश्रजी ने जेब से फिह्रिस्त की नकल निकाली और देखते हुये पांच अददे थानेदार के पास ले गये, कहा, यह गददे हमारी फिह्रिस्त में दर्ज हैं ।

*

थानेदार को फँसाना था, इसलिए जमीदार से लिया माल जिले चालान कर दिया। हाकिम से मिल कर कुल बातें समझा दी कि जिस तरह की कार्रवाई हो रही है इससे गाँव बिगड रहा है, सरकार का पाया उखड जाता है, लोग जमीदार और सरकार के मातहत नही रह जाते, वे मामले को व्यक्तिवादी बना देते है। चोरी से ले कर अब तक की तहकीकात का हाल थानेदार ने समझाया। शहादत के लिये कहा। प्रार्थना की कि मिश्र बदमाश आदमी है, इसने सरकार के मुलाजिम के खिलाफ दरखास्तें दी हैं और लोगो को फँसाये रहता है, जिससे पुलिस को कार्रवाई में अडचन पडती है। माल असली चोरी का नहीं, जमीदार से लिया गया है। कुछ चीजों को यह अपनी बताता है। यहाँ मफुर्नी अदालत में हाकिम को इनके रवैय्ये का

अन्दाजा हो जायगा, फिर हुक्म के मुताबिक कार्रवाई की जायगी। शाहादत की तारीख ले कर थानेदार चले गये। माल थाने में जमा रहा।

तारीख के रोज मामला समझाने के लिये गांव के जमीदारो और गवाहो को ले कर गये। मनोहर के गांव के भी जमीदार और पासी थे। पडोस के प्रतिष्ठित कहे जानेवाले प्राय सभी लोग। इस तरह फांसा कि थाने के हलके में कही भी मदद न मिले। बाहिरी लोगो को समझा दिया, सरकार के बागी लोगो की किसी तरह की मदद न की जाय। पहले मामला शुरू हुआ, फिर गवाहियां गुजरी। हाकिम ने सुन लिया, फिर असामियो की तारीख ली।

अपने लोगो को समझा दिया कि किसी के कान यह बात न पडे। सब लोग सरकार के दुश्मन को समझे रहें।

थाने से मिश्रजी को उनके परिवार के साथ शनाख्त के लिये तारीख बता दी। पहलवान को भी बुलाया।

मिश्रजी को बुलानेवाला एक सिपाही था। चौकीदार का नाम न था। मिश्रजी को इतना ही खटका। उन्होंने चौकीदार से आरजू-मिन्नत की। वह चलने के लिये तैयार हो गया। ऊंचे ब्राह्मण से वह विनम्रता ही चाहता था।

जिले में वकील की मार्फत मिश्रजी मिले। पहले से रिपोर्ट लिखाये हुए थे। दरख्वास्तो का जिक्र वकील के यहा

था। चौकीदार की व्यक्तिगत गवाही वक़ील ने ले ली। और-और लोगो से भीं पूछ-ताछ की। मामला ज़ोरदार था, वकील को हिम्मत हुई। माल की पहचान के लिये मिश्रजी की औरतें सिखाई-पढाई ही थी। उन्होंने उन्ही जेवरो को उठाया और कहा हमारी-जैसी हैं।

हाकिम ने अलग वकील को समझा दिया कि यह आदमी सरकार के खिलाफ चलता है और लोगो को उभाडता है। जो सरकारी तरीक़ा है उसको वदल रहा है। चालाक है इसमें शक नहीं। इसके घर की औरतें भी चालाक हैं। मगर सरकार का काम अपने ही रास्ते पर होगा। आप अदालत के सर न हो, नहीं तो वकालतनामा ज़ब्त किया जायगा। इतनी आजादी एक मामूली रियाया को नहीं दी जा सकती। आप अपने तौर से समझा दीजिये वाज़ू वचा कर।

वकील ने वैसा ही किया। कहा, हम अपनी ताकत भर लडे लेकिन हाकिम थानेदार का तरफदार है। अगर वह चीजें आप ही की हैं तो आप ज़ोर दे कर कहिए। दुफसली वातें न कीजिए। अदालत को शक होता है। वकील भी कमजोर पडता है।

मिश्रजी ने कहा कि हम जोर दे कर नही कह सकते। थानेदार की जो मर्जी हो करे। सरकार को मानते हैं, मगर सरकार के मुलाजिम की गैरकानूनो कार्रवाइयो को भी मानना पडेगा, यह हमसे न होगा।

★

२०

कई रोज़ बीत गये। गांव में तहलका मचा हुआ था। लोग कानो में बतला रहे थे। मिश्रजी के यहां आने-जाने वाले लोगो की हिम्मत पस्त थी। सारा वायुमडल दहशत खाये हुए था। किसी को कुछ मालूम न था क्या होनेवाला है, सब अपना-अपना अन्दाजा लडा रहे थे। कोई कह रहा था, बगावत की जगह, जमीदार और थानेदार से कुछ कह देने के सबब, मिश्रजी को राजा होनेवाली है। उनके दरवाज़े, कहा जाता है कि बदमाशो की बैठक लगती है, जो रैयत को जमीदार के खिलाफ भडकाते है। बाग, पनघट, घर, गली, कूचा, खेत-खलिहान सब जगह ऐसी ही बातो का तूमार बँध रहा था।

रात पार हो चुकी थी। सूरज की किरणें नही फूटी थी। चिडियां डालो पर प्रभाती गा रही थी। इक्की-दुक्की औरतें

श्रौर पहलवान के दरवाजे श्रावाज लगवाई । पहलवान निकले । सिपाहियो ने बांध लिया श्रौर उन का चालान कर लिया । गांव भर में सनसनी फैल गयी । घर में रोना-पीटना पड गया । सिपाही पहलवान को ले कर चल दिये । कुछ दूर तक जमीदार भी साथ गये । फिर लौट श्राए। बडी हमदर्दी से पहलवान से कहा, हम कहते थे—पहलवान, सरकार की श्रांख गड़ी है, श्रभी दो का खर्च है, फिर चार का होगा, इस पर भी बचाव न होगा । घूम-फिर कर जमींदार की ही शरण लेनी पड़ेगी ।

पहलवान ने कहा, जब तक रोग गले नही लगता तब तक वैद्य की बात याद नही श्राती । हम दो-सौ रुपये देने को तैयार हैं ।

जमीदार ने कहा, चलिए थाने में देखें श्रगर थानेदार मान जायें । पहलवान को ढाढ़स हुश्रा ।

जमींदार ने थानेदार से कहा, श्रगर बन्द कर दीजियेगा तो रुपये से हाथ धोना होगा, नही तो दो सौ रुपये देने को कहता है । खोल दीजिये, घर से ले श्रा कर दे जाय ।

पहलवान को सिपाही ने खोल दिया, कहा—इन्ही क रहना ।

पहलवान सर लटकाए हुए घर गये, दो सौ रुपये ले श्राए श्रौर जमीदार के हाथ में रख दिए ।

हिसाब से बॅटवारा हो गया । पहलवान श्रपनी चौपाल में श्रा कर बैठे ।

*

२१

मनोहर के घर के लोग हताश हो गये थे। पहले दो-एक दिन घर न जाने पर घरवालो ने रिश्तेदार जमीदार के यहां पूछ-ताछ की। जमीदार ने ढाढस बँधाया। चुपचाप बैठे रहो, कही काम से गये होगे, अपने-आप खबर मिल जायेगी कि खैरियत है। इतने से घरवालो को प्रबोध हो गया। महीने भर इसी भरोसे पर बीता। मनोहर न आया। बम्बई की चिट्ठी आई, उसमें मनोहर का जिक्र न था। चिट्ठी के जवाब में घरवालो ने लिखा कि मनोहर एक महीने से लापता है, जमीदारो के यहां गया था, वे लोग कहते है कि किसी काम से गया होगा, अभी तक कोई चिट्ठी नही आई। मनोहर के पिता की चिट्ठी मिली। पता लगाने के लिए दस रोज के अन्दर वह भी गांव दाखिल हुए। घर में रोना-पीटना पडा। और जब पूरी खबर नही मिली कि मनोहर इस

ससार से विदा हो गया है, तव मिलने की आशा फिर ववी। दूसरे रोज मनोहर के पिता अपनी वहन के यहाँ गये। वहाँ पूछने पर मालूम हुआ कि मनोहर उन्हीं के पास से गया है और पचीस रुपये कर्ज ले कर। दो महीने के व्याज के साथ वह रुपया अदा कर देना चाहिये। मनोहर के वाप ने स्वीकार कर लिया, मगर पेट ऐंठने नगा कि लड़के-का-लडका ग़ायव हुआ ओर उपर से रुपये देने पडे, व्याज के साथ। जमीदारो ने समझाया, जवान आदमी है, कही नौकरी तजवीज करता होगा, धीरज रखिये। अपने-आप सँभलकर आ जायगा। यहाँ जोर करने के लिये आया था, मगर दुनिया का रवैया कुछ और है, उसके आने के वाद से पुलिस के कई मामले लड़ गये, इसीलिये भाग गया, नहीं तो वँध गया होता। आप खामोशी से घर वैठिये या अपने काम पर जाइये। मनोहर के पिता घर चले गये। घर में जैसा सुना, कहा। गांव के जमीदार से मिले, आरजू-मिन्नत की। जमींदारो ने भी शिकायत की कि मनोहर का मिजाज कुछ चढा-चढा रहता था, दो-एक जगह गये वहाँ विगाड हो गयी।

सारे गांव में काना-फूसी होने लगी कि मनोहर चला गया - लेकिन किसानो में किसी ने उस की निन्दा न की। मनोहर के पिता जिधर से निकलते थे उधर ही वाहवाही होती थी, तुम्हारी मूँछें रख ली, तुम्हारा सर ऊँचा किया, वह हमारा अपना भैया है, उसको कोई डर नहीं, हम जानते हैं कि लोगो ने उस को

रहने न दिया, लेकिन वह वज्र है जो सर फोड कर टूटे, वह हमारी पुकार है, हमारे आँसू से टपक कर भाप बन कर उड गया है, कभी खुशी की बारिश लायेगा।

तालाब में सिघाडे भरे हुए थे। कहार ताक रहे थे। किनारे एक जगह कुटिया डाल कर रहते थे। एक दीवार हाथ भर की उठा कर चूल्हा बना रखा था वहाँ रोटी पकाते थे। मनोहर के पिता को देख कर बच्चू कहार बहुत खुश हुआ, सेर भर के करीब कच्चे सिघाडे ले आया और दे कर कहा, आपके बेटे की तारीफ में है, जो हम लोगो को ऊँचा उठाता है, ब्राह्मणों की तरह हमारा सर नही फोडता।

हरे-भरे बागो की कतार के किनारे से रास्ता था। रन फूली नही समा रही थी। इतनी खुशबू किसी इत्र की दूकान में भी नही मिलती और ऐसी अच्छी। उसके नीचे से एक चौगडा कूदता हुआ दूसरी झाडी की तरफ चला गया। चिडियाँ बसेरे को लौट रही थी। डालो पर चहक रही थी। सूरज सामने अस्त होने को था। मनोहर के पिता घर लौटे।

प्रचारक पॉकेट बुक्स

की बीस पुस्तको की पहली किस्त

उपन्यास

१	भाग्यवती	श्रद्धाराम फिल्लौरी
२	काले कारनामे	'निराला'
३	पवित्र पापी	नानक सिंह
४	पङ्कज	गुरुदत्त
५	लाल पंजा	दुर्गा प्रसाद खत्री
६	एक सड़क सत्तावन गलियां	कमलेश्वर
७	गवर्नेस	हर्षनाथ
८	मैडेलीन	मुद्राराक्षस
९	काठ के ताबूत और जिन्दा लाशें	प्रकाश दीक्षित
१०	वनमाला	'कैफ'

११.	बिखरे काँटे	लीला अवस्थी
१२	कादम्बरी	बाणभट्ट
१३	समर्पण	तुर्गनेव
१४	नारी एक पहेली	मोपासाँ
१५	कस्तूरी	शानी
१६	क्लीयोपेट्रा	एमिल लुडविग

उर्दू शायरी

१७	इकबाल की शायरी	डॉ० हीरालाल चोपडा

कहानी-सग्रह

१८	नया स्वर	मोहनसिंह सेंगर

काम-विज्ञान

१९	काम-विज्ञान तथा यौन-व्याधियां	द्वारका प्रसाद, एम ए

पाक-शास्त्र

२०	व्यजन-वीथिका	कुसुम कटारा

प्रत्येक का मूल्य **1/-**

०

(पॉकेट बुक्स विभाग)

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

मानमन्दिर, वाराणसी—१